प्रशिक्षण पुस्तिका - 80

हमारी कंद संपदा

मध्य प्रदेश में पायी जाने वाली कंद प्रजातियों की पहचान एवं विवरण

वित्त प्रदायकर्ता संस्थान

अनुसंधान,विस्तार एवं लोकवानिकी
मध्य प्रदेश वन विभाग, सतपुड़ा भवन
भोपाल, मध्य प्रदेश

परिपालन संस्थान

जैव विविधता एवं औषधीय पौध शाखा
राज्य वन अनुसंधान संस्थान , जबलपुर
2018

डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा भा.व.से.
संचालक

श्री ओ.पी. तिवारी भा.व.से.
उप संचालक एवं शाखा समन्वयक

डॉ.उदय होमकर
परियोजना मुख्य अन्वेषक एवं शाखा प्रभारी
जैव विविधता एवं औषधीय पौधे

सहयोगी

कु. तन्वी तेलंग, जे.आर.एफ.
श्रीमति माधुरी श्रीवास्तव, अनुसंधान सहायक
श्री प्रयुत मंडल, जे.आर.एफ.
कु. कल्पना पटेल, कम्प्युटर सहायक
श्री अरविन्द हल्दकार, वनपाल
श्री सुनील रजक, वनपाल

राज्य वन अनुसंधान संस्थान
(वन विभाग का स्वायत्तशासी संस्थान, मध्यप्रदेश शासन)
पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008
Phone: (0761) 2665540, 2666529, 2661938,
(Direct) Fax: (0761) 2661304
E-mail: sdfri@rediffmail.com, mpsfri@gmail.com
Website: http//www.mpsfri.org

बी –10, चार इमली, भोपाल
दूरभाषः मंत्रालयः 0755–2430011
निवासः 0755–2441377
निवासः 0755–2441081

डॉ. गौरीशंकर शेजवार
मंत्री
वन, योजना, आर्थिक एवं
सांख्यिकी विभाग

संदेश

वन एवं वनवासी के मध्य गहरा संबंध होता है। वन जहां संपूर्ण पर्यावरण को शुद्धता प्रदाय करते हैं, वहीं वनों मे एवं वनों के आस–पास रहने वाले वनवासियों की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जीविकोपार्जन का साधन भी उपलब्ध कराते हैं। सदियों से वन हमारे जीवन को सहारा देते आ रहे हैं।

वनों से हमें जलाऊ एवं ईमारती लकड़ियाँ तथा भोजन के लिये फल, कंद–मूल तथा स्वास्थ्य के लिये वन औषधीयाँ मिलती हैं।

कंद–मूल भोजन के साथ–साथ औषधि के रूप में भी महत्वपूर्ण होते हैं। बारिश के अलावा अन्य मौसम में वनों में कंदों की पहचान करना मुश्किल होता है, क्योंकि कंदों का ऊपरी भाग सूख जाता है।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में पायी जाने वाली कंद प्रजातियों की पहचान हेतु यह प्रशिक्षण पुस्तिका तैयार की गई है।

मैं आशा करता हूँ कि यह प्रशिक्षण पुस्तिका हमारे वन समिति के सदस्यों, वन कर्मचारियों तथा अधिकारियों हेतु बहुउपयोगी सिद्ध होगी।

(डॉ. गौरीशंकर शेजवार)

डॉ. अनिमेष शुक्ला,
भा.व.से.
प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं
वन बल प्रमुख
मध्यप्रदेश, भोपाल

मध्यप्रदेश शासन वन विभाग
कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक, (वन बल प्रमुख) म. प्र.
प्रथम तल, सतपुड़ा भवन, भोपाल – 462004
Govt. of M.P. Forest Department
O/o Principal Chief Conservator of Forests (HoFF) M.P.
First Floor, Satpura Bhawan, Bhopal - 462004
Tel.: (Office)0755-2674200, (Fax)0755-2674334
E-mail.:pccfmp@mp.gov.in,pccfmp@mpforest.org

संदेश

भारतवर्ष के मध्य में स्थित होने के कारण मध्यप्रदेश के वन विलक्षण जैव विविधता से परिपूर्ण है। यहां के वन, काष्ठीय वनोपज के साथ–साथ अकाष्ठीय लघुवनोपज की आपूर्ति में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अकाष्ठीय वनोपज में औषधीय महत्व के पौधों का विशेष स्थान होता है क्योंकि अधिकतर आयुर्वेदिक दवाइयों के निर्माण में उपयोग की जाने वाली जड़ी बूटियां वनों से ही प्राप्त होती है। वनों में पायी जाने वाली जड़ी बूटियां विशेषकर कंद प्रजातियों का संरक्षण एवं संवर्धन करना अति आवश्यक है, क्योंकि कंद प्रजातियों के अधिक दोहन से उक्त प्रजातियों के विलुप्त होने की स्थिति निर्मित हो सकती है।

अधिकतर कंद प्रजातियों का उपरी भाग तीन से छः माह तक ही हरा रहता है, बाद में वह सूख जाता है। ऊपरी भाग सूखने पर उस प्रजाति की पहचान करना भी संभव नहीं हो पाता, जिसके कारण वन क्षेत्र में उस प्रजाति के उपलब्धता की सही जानकारी नहीं हो पाती है। इसलिए हमारे मैदानी अमले को कंद प्रजातियों की जानकारी प्रदाय किया जाना आवश्यक है।

इसी बात को ध्यान में रखकर राज्य वन अनुसंधान ने यह पुस्तिका तैयार की है, जिससे वन विभाग के मैदानी अमले एवं वन समितियों के सदस्यों को कंद प्रजातियों की पहचान करने में आसानी होगी तथा औषधीय पौधों के संरक्षण के विषय मे सार्थक कार्य किया जा सकेगा।

(डॉ. अनिमेष शुक्ला)

शाहबाज अहमद, भा.व.से.
प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(अनुसंधान, विस्तार एवं लोक वानिकी)
सतपुडा भवन, भोपाल (म.प्र)

कार्या. प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र.
(अनुसंधान एवं विस्तार / लोक वानिकी)
सतपुड़ा भवन, प्रथम तल, भोपाल – 462004
फोन (का.)0755–2674224, मो. 0942479022, फैक्स 0755– 2570852
O/o Principal Chief Conservator of Forests M.P.
(Research & Extension/Lok Vaniki)
Satpura Bhawan, First Floor, Bhopal - 462004
Tel.: (Office)0755-2674224, (Fax)0755-2570852
E-mail.:pccfre.jfm@mp.gov.in, shahbaz_in@rediffmail.com

संदेश

भारतीय चिकित्सा पद्धति में वनों में पायी जाने वाली जड़ीबूटीयों का विशेष महत्व है। आज भी आयुर्वेदिक, युनानी एवं होम्योपैथी चिकित्सा में उपयोगी लगभग 90 प्रतिशत जड़ीबूटियों का संग्रहण वनक्षेत्रों से ही होता है। अधिकतर जड़ीबूटियो के उपयोगी भाग जड़ अथवा कंद होता है। औषधीय उत्पादों की मांग बढ़ने तथा कंदयुक्त जड़ीबूटियों के अवैज्ञानिक एवं विनाशकारी विदोहन होने के कारण ये बहुमूल्य जड़ीबूटियां वनों से विलुप्त होने की कगार पर है। कंद / प्रकंद जड़ एवं तने के परिवर्तित रुप होते है जिनका औषधीय एवं आर्थिक महत्व के साथ–साथ व्यापारिक महत्व भी होता है। कंद / प्रकंद जमीन के अंदर रहते है तथा इनमे से बहुत से पौधों का ऊपरी हिस्सा गर्मियों के मौसम मे सूख जाता है जिससे इनकी उपस्थिती का पता नही चल पाता है। अतः इन जड़ीबूटियों के बारे ज्यादा जानकारी नही रहती है जिस कारण इनका पर्याप्त संवर्धन एवं संरक्षण नही हो पाता है। अतः आवश्यक है कि इनके संबंध मे जानकारी तैयार कर इनके संवर्धन एवं संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाई जायें। राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा इस संबंध मे मध्यप्रदेश मे पायी जाने वाली विभिन्न कंद / प्रकंद प्रजातियों की पहचान हेतु यह पुस्तिका तैयार की है।

आशा है कि यह पुस्तिका हमारे क्षेत्रिय वन अमले और ग्राम वन समितियों के सदस्यों के लिये उपयोगी सिध्द होगी ।

शाहबाज अहमद, भा.व.से.

डॉ. पी. सी. दुबे, भा.व.से.
अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(अनुसंधान, विस्तार एवं लोक वानिकी)
सतपुडा भवन, भोपाल (म.प्र)

अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(अनुसंधान एवं विस्तार / लोक वानिकी)
सतपुड़ा भवन, प्रथम तल, भोपाल – 462004
फोन (का.)0755–2674222, मो. 09424790016,
Addl. Principal Chief Conservator of Forests
(Research & Extension/Lok Vaniki)
Satpura Bhawan, First Floor, Bhopal - 462004
Tel.: (Office)0755-2674222, Mo. 94247 90016

संदेश

प्राचीन काल से ही मनुष्य विभिन्न बीमारियों में औषधीय पौधों से प्राप्त दवाईयों का उपयोग करता आ रहा है। बदलते परिवेश मे जड़ी बूटियों से होने वाले इलाज पर लोगों का विश्वास पुनः बढ़ने लगा है। विगत वर्षों में औषधीय पौधों के उत्पादों की बढ़ती मांग एवं इन उत्पादों पर आधारित कंपनीयों की बढ़ती संख्या के कारण वनक्षेत्रों से जड़ी बूटियों का विदोहन में भी अत्यधिक वृद्धि हुई है। वर्तमान में भी लगभग 90 प्रतिशत औषधीय पौध प्रजातियों का संग्रहण सामान्यतः वनों से ही किया जाता है जिसके कारण बहुमूल्य जड़ीबूटियों की प्रजातियाँ वनों से काफी कम होने की कगार पर पहुँच रही है। कई पौधों विशेषकर कंद प्रजातियों की जानकारी न होने के कारण वनों मे इनके संरक्षण करने मे मैदानी अमले को परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसी बात को ध्यान मे रखते हुए राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर एवं अन्य संस्थाओं द्वारा जडीबूटियों के पहचान, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु प्रयास किया जा रहा है। इसी तारतम्य मे संस्थान द्वारा विभिन्न कंद प्रजातियों की जानकारी हेतु यह पुस्तिका तैयार की गयी है।

आशा है कि यह पुस्तिका वन विभाग के मैदानी अमले को विभिन्न कंद प्रजातियों की पहचान करने मे सहायक सिध्द होगी।

(डॉ. पी. सी. दुबे) भा.व.से.

प्रस्तावना

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा मध्यप्रदेश मे पायी जाने वाली विभिन्न वन औषधिय पौधें के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा मे विगत कई वर्षो से कार्य किया जा रहा है। संस्थान की औषधिय पौधों की रोपणी मे इन पौधों का संरक्षण का कार्य किया जा रहा है। साथ ही आवश्यकता होने पर इन पौधों की रोपण एवं कृषी तकनिक के विकास पर भी कार्य किया जाता है।

संस्थान द्वारा किये जाने वाले विभिन्न अनुसंधान कार्यो को वन विभाग के मैदानी अमले तक पहुचांने हेतु संस्थान द्वारा समय–समय पर कार्य किये जाते है, साथ ही वन विभाग के मैदानी अमले को क्षेत्र मे होने वाली समस्याओं के निदान हेतु भी क्षेत्र की आवश्यकताओं को ध्यान मे रखकर अनुसंधान कार्य भी किये जाते है।

वन विभाग के मैदानी अमले एवं वन समितियों के सदस्यों से चर्चा के दौरान यह पाया गया की उन्हें मध्यप्रदेश मे पायी जाने वाली कंद प्रजातियों के बारे मे बहुत कम जानकारी है। इस बात को ध्यान मे रखते हुए संस्थान द्वारा अनुसंधान, विस्तार एवं लोक वानिकी सतपुडा भवन, भोपाल (म.प्र) के अर्थिक सहयोग से एक परियोजना पर कार्य किया गया। इस परियोजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश के विभिन्न वन क्षेत्रों का दौरा कर वहां के मैदानी अमले एवं वन समितियों के सदस्यों के सहयोग से विभिन्न कंद प्रजातियों का संग्रह कर उनका संरक्षण संस्थान की औषधिय पौधों की रोपणी मे किया गया।

परियोजना के कार्यो के दौरान संग्रहित प्रजातियों की जानकारी के आधार पर यह पुस्तिका तैयार की गयी है।

आशा है कि यह पुस्तिका क्षेत्रिय वन अमले और ग्राम वन समितियों के सदस्यों के लिये उपयोगी सिध्द होगी ।

(धर्मेन्द्र वर्मा) भा.व.से.
संचालक,
राज्य वन अनुसंधान संस्थान
जबलपुर, मध्यप्रदेश

परिचय:-

मध्यप्रदेश वन सम्पदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है। इसका वन आवरण 77462 वर्ग किमी. है, जो कि भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 25.12 प्रतिशत है। वन क्षेत्रों के बाहर भी वृक्ष आवरण की उपलब्धता मध्यप्रदेश की जैवविविधता की क्षमता को सदृढ़ करती है।

वनों से हमें औषधियां, रंग, खुशबूयुक्त इत्र, रेशे, गोंद आदि भी प्राप्त होते है। इसके अलावा ऐसी कई प्रजातियाँ हमारे वनों में हैं जिनसे हमें भोजन भी प्राप्त होता है। इनमें कंद एवं प्रकंद युक्त प्रजातियाँ प्रमुख होती हैं।

वनों के आसपास के क्षेत्रों में भी ऐसी कई वनस्पतियां मिलती है जो कि औषधीय रूप से महत्वपूर्ण होती है। यदि खाली दिखने वाले मैदानों में गंभीरता से अध्ययन किया जाए तो वहां भी महत्वपूर्ण प्रजातियाँ विशेषकर घास एवं कंद युक्त पौधे उपस्थित हो सकते हैं। कंदयुक्त पौधे कम बारिश में भी अपने आप को खत्म होने से बचा लेते हैं क्योंकि इनके कंद में विपरीत परिस्थियों से निपटने के लिए पर्याप्त मात्रा में भोजन संग्रहित होता है।

सामान्यतः दिवाली के बाद अक्टूबर–नवम्बर से गांव–गांव में लगने वाले बाजार–हॉट में विभिन्न प्रकार के कंद बिकने आते हैं जिससे स्पष्ट होता है कि वन क्षेत्रों के आसपास के निवासियों के लिये अनाज एवं दालों के बाद खाद्य संपूरक के रूप में कंद की भी भूमिका होती है।

मध्यप्रदेश में 46 अनुसूचित जनजाति समुदाय है, जो कि प्रदेश की जनसंख्या का लगभग 21. 1 प्रतिशत हिस्सा है। इनमें से अधिकतर वनों में या वनों के आसपास निवास करते हैं एवं अपने विभिन्न रुप से जीवन निर्वाह के लिये वनों पर आश्रित रहते हैं।

कंद केवल भोजन का हिस्सा ही नहीं वरन् कई प्रकार रोगों जैसे कुष्ठरोग, पेचिश, पेट के कृमी आदि के उपचार में भी इनका उपयोग होता है। कुछ कंद वलबर्धक टॉनिक के रूप में भी उपयोग में लाये जाते हैं। ऐसे कंदों की व्यवसाय की दृष्टि से भी उपयोगिता होती है।

परिक्षण में यह भी पाया गया है कि कंदों में प्राकृतिक रूप से प्रोटिन, स्टार्च एवं कार्बोहाइडेट की प्रचुर मात्रा होती है साथ ही कुछ कंदों मे अन्य घटक भी होते हैं। अतः सभी कंदों को खाने योग्य बनाने की विधियॉ भी अलग–अलग होती है। हमारे वन वासियों के पास जो परंपरागत ज्ञान होता है उसके आधार पर ही कंदों का वे उपयोग करते हैं। परंतु कई बार यह देखा गया है कि वे अन्य कंद प्रजातियों के बारे में अनभिज्ञ रहते हैं। जानकारी न होने से इन कंद प्रजातियों का उपयोग एवं संरक्षण नहीं हो पा रहा है।

जिन कंदों का व्यापारिक महत्व होता है उनका अवैज्ञानिक तरीके से दोहन किये जाने के कारण ऐसी कंद प्रजातियाँ धीरे–धीरे हमारे वन क्षेत्रों से कम होती जा रही है। वर्तमान मे सभी कंद प्रजातियों के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता है।

परियोजना सारांश:-

औषधीय गुणों एवं भोजन में उपयोग लाने के कारण कई वन क्षेत्रों से कंद प्रजातियों का विदोहन अनियंत्रित एवं अवैज्ञानिक तरीके से हो रहा है। इस कारण कई कंद प्रजातियों की संख्या वनों में दिनों–दिन कम होती जा रही है। कई बार कंद निकाल लेने से वह प्रजाति उस क्षेत्र से खत्म हो जाती है या बीजों से तैयार पौधों मे नये कंद के विकास हेतु कई वर्ष लग जाते है। एक निश्चित समय तक ही कंद प्रजातियों का उपरी हिस्सा हरा–भरा रहता है बाद में यह सूख जाता है जिससे उनकी पहचान करना असंभव हो जाता है। वन विभाग के मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा आयोजित किये जाने वाले वन मेलों में संस्थान के द्वारा लगाये गये कंदों के प्रदर्शन के दौरान यह देखा गया है कि वनों मे पाये जाने वाले कंदों के बारे में हमारे वन अमले के पास बहुत ही कम जानकारी उपलब्ध है।

इसी को ध्यान में रखकर मध्यप्रदेश के वनों पाई जाने वाली विभिन्न कंद प्रजातियो का सर्वेक्षण कर उनका बाह्य स्थलीय संरक्षण करने के उद्धेश्य से एक परियोजना हेतु अनुसंधान, विस्तार एवं लोकवानिकी भोपाल द्वारा वित्तीय सहायता प्रदाय की गई है जिसके अंतर्गत मध्यप्रदेश के विभिन्न वन क्षेत्रों में जाकर वहां का सर्वेक्षण कर कंद प्रजातियों का संग्रहण किया गया। इन संग्रहित प्रजातियों को संस्थान में रोपित कर संरक्षित किया गया। इन कंद प्रजातियों में होने वाले मासिक परिवर्तन का भी अध्ययन किया गया।

इस परियोजना कार्य के दौरान अन्य वन क्षेत्रों के अतिरिक्त विभिन्न रोपणियों/संस्थानों से भी महत्वपूर्ण कुछ कंद प्रजातियों का संग्रहण किया गया। व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रजातियाँ जैसे कुलंजन, आरारोट आदि का भी संग्रहण एवं संरक्षण किया गया तथा मध्यप्रदेश के कुछ क्षेत्रों खेती की जाने वाली प्रजातियॉ जैसे रतालू, गराडु, पिड़ीकंद आदि भी संग्रहित एवं संरक्षित की गई है।

वर्तमान में भी कुल 83 कंद प्रजातियों को परियोजना अन्तर्गत संग्रहित कर संरक्षित किया गया है जिसमे से 71 प्रजातियाँ जो कि मध्यप्रदेश मे पायी जाती है उनका उल्लेख तालिका क्रमांक 1 में किया गया है तथा 10 प्रजातियाँ उल्लेख तालिका क्रमांक 2 में किया गया है जो कि मध्यप्रदेश के वनों मे नहीं पायी जाती है परंतु व्यापारिक एवं औषधीय दृष्टि से महत्व होने के कारण उनका उपयोग खेती, रोपणी एवं घरों में भी किया जाता है। मध्यप्रदेश में पाये जाने वाले दो प्रजाति के बांस पाये जाते है। बांस में राईजोम होते है अतः इनका वर्णन भी इस पुस्तिका मे किया गया है। सभी संग्रहित 84 कंद प्रजातियों की जानकारी एकत्रित कर यह पुस्तिका तैयार की गयी है। इस पुस्तिका से हमारे वन अमलों को कंद प्रजातियों के संबंध में जानकारी प्राप्त होगी।

तालिका क्रमांक 1: परियोजना अन्तर्गत संग्रहित मध्यप्रदेश मे पायी जाने वाली कंद प्रजातियॉ।

क्रमांक	वैज्ञानिक नाम	सामान्य नाम	कुल
1.	*Acorus calamus Linn.*	बच	*Araceae*
2.	*Allium leptophyllum Wall.*	जंगली लहसुन	*Liliaceae*
3.	*Amorphophallus paeoniifolius (Dennst.) Nicolson*	देशी सूरन	*Araceae*
4.	*Amorphophallus campanulates Blume ex Dence*	जंगली सूरन	*Araceae*
5.	*Arisaema tortuosum Schott*	वन भुट्टा	*Araceae*
6.	*Asparagus racemosus Willd.*	शतावर बेला	*Liliaceae*
7.	*Cayratia trifolia.*	अमलबेल	*Vitaceae*
8.	*Cayratia auriculata*	खटुआ	*Vitaceae*
9.	*Ceropegia bulbosa Roxb.*	वन सिंघाड़ा	*Asclepiadaceae*
10.	*Ceropegia hirsuta Wight & Arn.*	वन सिंघाड़ा	*Asclepiadaceae*
11.	*Chlorophytum tuberosum Baker*	सफेद मूसली	*Liliaceae*
12.	*Cholophytum borivilianum Santapau & R. R. Fern.*	सफेद मूसली	*Liliaceae*
13.	*Citrullus colocynthis Schrad.*	इंद्रायण	*Cucurbitaceae*
14.	*Colocasia esculenta (Linn.) Schott*	घुईयां बड़ी	*Araceae*
15.	*Costus speciosus (Koenig) Sm.*	सफेद केवकंद	*Costaceae*
16.	*Curculigo orchioides Geartn.*	काली मूसली	*Amaryllidaceae*
17.	*Curcuma amada Roxb.*	आमा हल्दी	*Zingiberaceae*
18.	*Curcuma angustifolia Roxb.*	तीखुर	*Zingiberaceae*
19.	*Curcuma aromatica Salisb.*	जंगली हल्दी	*Zingiberaceae*
20.	*Curcuma caesia Roxb.*	काली हल्दी	*Zingiberaceae*
21.	*Cyperus scariosus R. Br.*	नागर मोथा	*Cyperaceae*
22.	*Dioscorea alata Linn.*	रतालू	*Dioscoreaceae*

23.	*Dioscorea bulbifera Linn.*	अगीठा	*Dioscoreaceae*
24.	*Dioscorea daemona Roxb.*	बैचांदी	*Dioscoreaceae*
25.	*Dioscorea esculenta Burkill*	पीडी कंद	*Dioscoreaceae*
26.	*Dioscorea spp.*	डोरी कांदा	*Dioscoreaceae*
27.	*Dioscorea spp.*	तीन पत्ती कंद	*Dioscoreaceae*
28.	*Dioscorea spp.*	दुधी कांदा	*Dioscoreaceae*
29.	*Dioscorea Pentaphylla Linn.*	सुअर कंद	*Dioscoreaceae*
30.	*Dioscorea sp.*	गराडू	*Dioscoreaceae*
31.	*Dioscorea wallichii Hook. f.*	गिरची कांदा	*Dioscoreaceae*
32.	*Elephantopus scaber Linn.*	ज. गोभी	*Asteraceae*
33.	*Eulophia nuda Lindl.*	वन सिंघाड़ा	*Orchidaceae*
34.	*Flemingia nana (Roxb.) Baker.*	भैसाताड़	*Fabaceae*
35.	*Globba marantina L.*	ज. अदरख (अमरकंटक)	*Zingiberaceae*
36.	*Globba racemosa (Sm.) Gagnep.*	ज. अदरख	*Zingiberaceae*
37.	*Gloriosa superba Linn.*	कलिहारी	*Liliaceae*
38.	*Habenaria Marginata*	वृद्धि भेद	*Orchidaceae*
39.	*Habenaria furcifera Lindl.*	वृद्धि भेद	*Orchidaceae*
40.	*Habenaria plantaginea (Roxb.) Wall. ex Lindl.*	—	*Orchidaceae*
41.	*Habenaria spp.*	—	*Orchidaceae*
42.	*Habenaria spp.*	—	*Orchidaceae*
43.	*Habenaria spp.*	—	*Orchidaceae*
44.	*Habenaria spp.*	—	*Orchidaceae*
45.	*Hedychium coronarium Koen.*	गुलबकावली	*Liliaceae*
46.	*Iphigenia indica (L.) A. Gray ex Kunth*	घास लीली, भुईचक्र	*Liliaceae*
47.	*Leea macrophylla Roxb.*	हथपन	*Vitaceae*
48.	*Leea crispa Linn.*	हासियाढापर	*Vitaceae*
49.	*Leea sps*	वज्रगांठ	*Vitaceae*

50.	*Mirabilis jalapa Linn.*	गुलब्बास लाल	*Nyctaginaceae*
51.	*Mirabilis jalapa Linn.*	गुलब्बास सफेद	*Nyctaginaceae*
52.	*Mirabilis jalapa Linn.*	गुलब्बास पीला	*Nyctaginaceae*
53.	*Momordica dioca Roxb. Will.*	परोडा, ककोरा	*Cucurbitaceae*
54.	*Nervilia prainiana*	वन सिंघाड़ा	*Orchidaceae*
55.	*Orthosiphon rubicundus (D. Don) Benth.*	बड़ी सतावर	*Lamiaceae*
56.	*Oxalis corniculata Linn.*	अमरूल साग बड़ी	*Oxalidaceae*
57.	*Pueraria tuberosa DC.*	पाताल कुम्हड़ा	*Fabaceae*
58.	*Ruellia tuberosa Linn.*	तपसकाय	*Acanthaceae*
59.	*Scilla hyacinthina (Roth) J. F. Macbr.*	सर्पकांदा	*Liliaceae*
60.	*Solena amplexicaulis (Lam.) Gandhi*	जंगली कुन्दरू	*Cucurbitaceae*
61.	*Spathogattic puberscene (Lindl.) Hook.f.*	लाल प्याज	*Orchidaceae*
62.	*Tacca leontopetaloides (L.) Kuntze*	सापकंद	*Dioscoreaceae*
63.	*Typhonium trilobatum Schott.*	घेरकोचू	*Araceae*
64.	*Urginea indica Kunth*	जंगली प्याज बड़ी	*Liliaceae*
65.	*Vitis latifolia Roxb.*	जंगली अंगूर	*Vitaceae*
66.	*Xanthosoma saggitifollium (L.) Schott*	ब्रम्हरकास	*Araceae.*
67.	*Zephyranthes citrine*	पीली लीली	*Amaryllidoideae*
68.	*Zingiber capitatum Roxb.*	जंगली अदरक	*Zingiberaceae*
69.	*Zingiber mioga Thunb.*	जंगली अदरक	*Zingiberaceae*
70.	*Zingiber roseum*	जंगली अदरक	*Zingiberaceae*
71.	*Zingiber spp. (L.) Smith*	जंगली अदरक	*Zingiberaceae*

1. *Acorus calamus* Linn.

1. सामान्य नाम – बच
2. वानस्पतिक नाम – *Acorus calamus* Linn
3. कुल – *Araceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अप्रैल से जून।
6. आकारिकी – यह बहुवार्षिक शाकीय पौधा होता है। इसकी ऊँचाई 2–4 फीट तक होती है। पत्तियाँ गहरे हरे रंग की सीधी, चपटी तथा आगे से भालाकार होती है। आकार मे यह 2 से 4 फीट तक लंबी एवं 3 से 4 इंच चौड़ी होती है। इसकी पत्तियों मे सामान्तर विन्यास होता है। इसके किनारे चिकने या लहरदार होते हैं। इसमें फूल एवं फल सामान्यतः नहीं आते है परंतु पुराने पौधों मे यह पाये जाते है जोकि लेड़ीपीपल के फल की तरह दिखते है। जिनकी की लंबाई 3 से 5 सेमी. होती है। फल गूदेदार तथा अनेक बीजों वाला हल्के हरे–पीले रंग का होता है। इसका प्रकंद रोयेदार, सुगंधित तथा भूरे रंग का होता है।
7. वितरण – वनों मे यह नदी, नालों के आसपास या दलदली स्थानों मे पाया जाता है।
8. उपयोगी भाग – प्रकंद या जड़
9. उपयोग –
   - ❖ प्रकंद के पाउडर का उपयोग श्वांस रोग के उपचार में किया जाता है
   - ❖ प्रकंद बलवर्धक होता है, इसका सेवन पाचन संबंधी विकारों के उपचार में सहायक होता है।
   - ❖ प्रकंद के काढ़े अथवा चूर्ण का सेवन स्मरण शक्ति बढ़ाने में किया जाता है।
   - ❖ प्रकंद के तेल का उपयोग त्वचा संबधी रोगों के उपचार किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी जड़े (प्रकंद) जमीन की सतह से नीचे सामान्तर फैलती है जिसकी लंबाई 30 से 40 सेमी. होती है परंतु 2 वर्ष पुरानी फसल में कभी–कभी 1.5 से 2 मी. तक हो सकती है। इसकी ऊपर की पत्तियों मे पीलापन आने पर इसकी जड़ों का खोदकर निकाल लेते है। जड़ों को साफ करके उसके छोटे–छोटे टुकड़े कर इन्हें साफ स्थान पर सुखा लिया जाता है। जड़े (प्रकंद) से ही पौधे तैयार किये जाते है।

रोपणी में तैयार पौधे

खेत में पौधे

खुदाई के बाद पौधा

सफाई के बाद प्रकंद

4. *Amorphophallus campanulates* Blume ex Dence

1. सामान्य नाम – जंगली सूरन
2. वानस्पतिक नाम – *Amorphophallus campanulates* Blume ex Dence
3. कुल – *Araceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – मई से जून
6. आकारिकी – यह बहुवार्षीक शाकीय पौधा होता है। इसके घनकंद अर्ध गोलाकार होते हैं परंतु आकार में देशी सूरन से छोटे होते हैं। पत्तियाँ हस्ताकार तथा हल्के हरे रंग की होती है। जिनकी लंबाई 14 से 16 सेमी. तक होती है। इसके तने पर गहरे रंग के धब्बे होते है।
7. वितरण – मण्डला, बैतूल, सिवनी, बालाघाट, जबलपुर, अमरकंटक, बालाघाट मे सामान्यतः खेतों आसपास में मिल जाता है।
8. उपयोगी भाग – घनकंद
9. उपयोग – लिवर टॉनिक के रुप में, दमा एवं श्वांस रोग में उपयोगी होता है परंतु उपयोग करने से पूर्व वैद्य की सलाह अवश्य लेना चाहिये।
10. कटाई की तकनीक – जब पौधा परिपक्व हो जाता है तथा जमीन से ऊपर का भाग सूख जाता है तब अक्टूवर–नवंबर माह में सूरन को निकालने के लिए पौधे के चारो ओर 60 से 70 सेमी. के लगभग घेरे में तथा लगभग 1 फीट गहराई में कुदाली से धीरे–धीरे मिट्टी हटाकर पूर्ण सूरन के कंद को निकाला जाता है। इसके कंदों से मिट्टी आदि साफ कर उन्हें प्रयोग में लाया जाता है।

फूल

फल एवं कंद

कंद

5. *Arisaema tortuosum* Schott

1. सामान्य नाम – वन भुट्टा, whipcord cobra lily
2. वानस्पतिक नाम – *Arisaema tortuosum* Schott
3. कुल – *Areacae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई–अगस्त
6. आकारिकी – यह भी एक शाकीय कंदिल पौधा होता है। यह गुच्छों में निकलता है तथा इसकी ऊंचाई लगभग 1.5 से 2 मी. तक होती है। जून माह के शुरू में 4 इंच लंबा गूदेदार पर्णवृन्त निकलता है जिसमें 2 हरे रंग की हस्ताकार पत्तियाँ लगी होती है। इसकी मुख्य डंडी (स्पैडिक्स) हरे बैंगनी रंग की एवं लगभग 2 से 2.5 मी. लंबी होती है। स्पैडिक्स के द्वारा ही इसकी पहचान की जा सकती है। फूल नर या द्विलिंगी होते हैं। इसके फूल में से 10 से 12 इंच लंबी जीभ के आकार की आकृति निकलती है। इसके फल छोटे, गोल पहले हरे रंग के एवं परिपक्व होने पर लाल रंग के बीजयुक्त होते हैं जो कि भुट्टे जैसे दिखते है अतः इसे वन भुट्टा भी कहते है।
7. उपयोगी भाग – कंद एवं पत्तियाँ
8. वितरण – यह संपूर्ण मध्य प्रदेश में पाया जाता है। खेतों की मेढ़ पर भी यह पाया जाता है।
9. उपयोग – इसकी पत्तियों के काढ़े का उपयोग सांप के काटने एवं बिच्छू के डंक मारने पर किया जाता है। इसके घनकंद का लेप हल्दी के साथ सिर दर्द एवं गठियावात के उपचार मे किया जाता है। इसके कंद का उवयोग यकृत रोग एवं पेट दर्द में भी किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – किसी औजार से इसके पौधे से कुछ दूरी पर चारों तरफ खुदाई करके इसके कंदो को निकाल लेते है। कंदो को साफ करके उसमें से मिट्टी एवं बारीक जड़ अलग कर लेते है और कंदों को गीला या सुखाकर प्रयोग में लाया जाता है।

कंद

फल

7. *Cayratia auriculeta* (Wallich) Gamble

1. सामान्य नाम – लोमडी के अंगूर, खटुआ
2. वानस्पतिक नाम – *Cayratia auriculeta* (Wallich) Gamble
3. कुल – *Vitaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – सितंबर से दिसंबर
6. आकारिकी – यह बहुवर्षीय लता होती है जो कि नमी वाले इलाकों में विशेषकर पानी के स्त्रोत के आसपास पायी जाती है। इसकी पत्तियाँ हल्के हरे रंग की एवं पाँच पत्रक के समूह में होती है। पत्रक की लंबाई 8 से 16 सेमी. तक होती है। पत्तियों की सतह रोयेदार होती है। इसके फूल छोटे एवं सफेद रंग के होते है। फल गुच्छे में लगते है जो कि पकने पर काले हो जाते है। यह लता जमीन पर ही फैल जाती है या अन्य वृक्षों का सहारा लेकर 15 से 20 मीटर ऊपर तक चढ़ जाती है। इसकी नई बेला मुलायम तथा पुरानी बेला काष्ठीय हो जाती है।
7. वितरण – जबलपुर, मण्डला, शिवपुरी, अमरकंटक, पचमढ़ी, छिंदवाड़ा।
8. उपयोगी भाग – कंदिल जड़े एवं पत्तियाँ
9. उपयोग – इसकी पत्तियों का उपयोग मूत्रवर्धक के रूप में किया जाता है। इसके कंद को लेडीपिपर के साथ पीस कर boil में तथा छाले में उपयोग किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी ताजी पत्तियों को तोड़कर उपयोग में लाया जाता है तथा इसकी जड़ों को खोदकर मिट्टी आदि को निकाल लेते है तथा जड़ को सुखाकर रख लेते है।

पत्तियाँ एवं फल

8. *Cayratia trifolia*

1. सामान्य नाम – लोमडी के अंगूर, अमलबेल, रामचना
2. वानस्पतिक नाम – *Cayratia trifolia.*
3. कुल – *Vitaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – सितंबर से दिसंबर / दिसंबर से जनवरी
6. आकारिकी – यह बहुवर्षीय लता होती है इसकी पत्तियाँ गहरे हरे रंग की एवं तीन पत्रक के समूह मे होती है। पत्रक की लंबाई 2 से 8 सेमी. तथा चौडाई 1.5 से 5 सेमी. होती है। पत्तियों की सतह लहरदार होती है। इसके फूल छोटे एवं सफेद रंग के होते है। फल गुच्छे में लगते है जो कि पकने पर काले हो जाते है। यह लता जमीन पर ही फैल जाती है या अन्य वृक्षों का सहारा लेकर 10 से 15 मीटर ऊपर तक चढ़ जाती है।
7. वितरण – जबलपुर, मण्डला, शिवपुरी, अमरकंटक, पचमढ़ी, छिंदवाड़ा।
8. उपयोगी भाग – कंदिल जड़े
9. उपयोग – इसकी जड़ को लेडीपिपर के साथ पीस कर boil मे तथा astringent के रुप में उपयोग में लिया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी जड़ों को खोदकर मिट्टी आदि को निकाल लेते हैं तथा जड़ को सुखाकर रख लेते है।

कंद

9. *Ceropegia bulbosa* Roxb.

1. सामान्य नाम – वन सिंघाड़ा
2. वानस्पतिक नाम – *Ceropegia bulbosa* Roxb.
3. कुल – *Asclepiadaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से अगस्त
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय लता होती है। जो लगभग 2 मी. लंबी होती है। ये जमीन की सतह पर फैलती है या आसपास में उगे पौधों पर चढ़ती है। इसकी पत्तियाँ मांसल, चिकनी गोल या अंडाकार रोये रहित हरे रंग की होती हैं। पत्तियाँ छोटे पर्णवृंतयुक्त होती हैं। फूल सपुष्पवृंत 3 से 5 फूलों के गुच्छे में लगे रहते हैं। पुष्पवृंत की लंबाई 1.2 से 2.6 सेमी. होती है। इसके फूल बहुत ही सुंदर एवं लगभग 2.5 सेमी. लंबे होते है तथा बाहर से ये रोयेरहित होते हैं। फूल हल्के क्रीम रंग का एवं ऊपरी भाग सफेद बैंगनी रंग का होता है। इसकी फलियां लगभग 8 सेमी. लंबी एवं आगे से पतली एवं रोमरहित होती है। फली में 8–9 मिमी. लंबे बीज, चपटे अंडाकार आकार के होते हैं। इसका परिवक्व कंद 25 से 40 ग्राम वजन का होता है। कंद गोलाकार तथा ऊपर– नीचे से चपटे भूरे सफेद रंग के दिखते हैं।

पत्तियाँ

7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – शहडोल, छतरपुर
9. उपयोग – इसकी पत्तियाँ एवं कंद का स्थानियों द्वारा खाने में प्रयोग किया जाता है। इसके कंद सुपाच्य समझा जाता है। इसे टॉनिक के रूप उपयोग करते हैं। बहरेपन के इलाज में इसके बीजों का लेप बनाकर कानों में डाला जाता है। इसके कंद का काढ़ा बनाकर पीने से मूत्र संबंधी बीमारियां दूर होती हैं।
10. कटाई की तकनीक – किसी औजार से इसके पौधे से कुछ दूरी पर चारों तरफ खुदाई करके इसके कंदो को सावधानी से निकाल लेते है। कंदो को साफ करके उसमें से मिट्टी एवं बारीक जड़ अलग कर लेते है और कंदों को गीला या सुखाकर प्रयोग में लाया जाता है।

कंद

10. *Ceropegia hirsuta* Wight & Arn.

1. सामान्य नाम – वन सिंघाड़ा,
2. वानस्पतिक नाम – *Ceropegia hirsuta* Wight & Arn.
3. कुल – *Asclepiadaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितबंर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय लता होती है। इसकी पत्तियाँ लगभग 6.5 सेमी. लंबी एवं 3 सेमी. चौड़ी होती है। पत्तियाँ सरल होती है जिसके दोनों तरफ हल्के रोये होते है। पत्तियों की डंठल लगभग 2 सेमी. लंबी एवं रोयेदार होती है। इसके फूल बहुत ही सुंदर तथा लगभग 5 सेमी. लंबे होते है। फूल नली के आकार के होते है एवं इसका निचला भाग हल्का फूला हुआ होता है। फूल का नली वाला भाग हल्के क्रीम रंग का एवं ऊपरी भाग भूरे बैंगनी रंग का होता है। फल हरे, पतले, बेलनाकार तथा 5 से 6 से.मी. लंबे होते है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – जबलपुर, अमरकंटक, पचमढ़ी
9. उपयोग – इसके कंद को सुपाच्य समझा जाता है। इसके कंदों को सब्जी के रूप में खाया जाता है। स्थानियों द्वारा कंद खाने में प्रयोग किया जाता है तथा इसे टॉनिक के रूप मे षि उपयोग करते हैं।
10. कटाई की तकनीक – किसी औजार से इसके पौधे से कुछ दूरी पर चारों तरफ खुदाई करके इसके कंदो को सावधानी से निकाल लेते है। कंदो को साफ करके उसमें से मिट्टी एवं बारीक जड़ अलग कर लेते है और कंदों को गीला या सुखाकर प्रयोग में लाया जाता है।

फूल

फल

11. *Chlorophytum tuberosum* Baker

1. सामान्य नाम – सफेद मूसली
2. वानस्पतिक नाम – *Chlorophytum tuberosum* Baker
3. कुल – *Liliacae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने – अगस्त से सितंबर
6. आकारिकी – सफेद मूसली एक कंद युक्त एवं तना रहित शाकीय पौधा होता है। इसकी ऊंचाई 30 से 40 सेमी. तक होती है। इस सफेद मूसली की जड़ें अथवा कंद धागेयुक्त होते है। एक पौधे में लगभग 10 से 40 तक जडें अथवा कंद मूसली लगी होती है। इसकी पत्तियाँ रेखीय चपटी व नुकीली शीर्ष वाली एवं अन्य प्रकार की सफेद मूसली की तुलना में चौडी होती है। पुष्पक्रम रेसीम प्रकार का होता है। फूल सफेद रंग के गुच्छो में लगते हैं। इसके फल माह अक्टूबर से नवंबर तक पकते है जो कि तीन उभार वाले केप्सूल आकार के होते है। बीज छोटे, चपटे तथा काले होते है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – मण्डला, जबलपुर, अमरकंटक, सिधी, रीवा, बालाघाट
9. उपयोग – इसकी जड़ें (कंद) और आयुर्वेदिक दवाईयों के निर्माण में बहुतायात प्रयोग में लाई जाती है। सफेद मूसली का उपयोग शारीरिक शिथिलता को दूर करने, आयुर्वेदिक टॉनिक बनाने मे, प्रसवोपरान्त होने वाली बीमारियों एवं मधुमेह के उपचार में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – नवंबर माह के बाद जब इसकी पत्तियाँ एवं ऊपरी हिस्सा सूख जाता है तब उसके एक महीने के बाद मूसली के कंदो का विदोहन करते हैं। कुदाली की सहायता से पौधे के आस–पास कुछ दूरी से चारों तरफ खोदकर इसके कंदो को निकाल लिया जाता है। बडे कंदों को तोड़कर टोकरी में पानी से कंदों की धुलाई की जाती हैं। पानी से धोने के पश्चात इसे साफ करके धूप में सुखाते हैं। पूरी तरह सूख जाने के बाद इसका पॉलीथिन / जूट के बोरों में भंडारण कर लिया जाता है।

कंद

12. *Cholophytum borivilianum* Santapau & R. R. Fern.

1. सामान्य नाम – सफेद मूसली
2. वानस्पतिक नाम – *Cholophytum borivilianum* Santapau & R. R. Fern.
3. कुल – *Liliacae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितंबर
6. आकारिकी – यह एक शाकीय पौधा है जिसकी अधिकतम उंचाई 1.5 फीट होती है। इसके कंद जमीन के नीचे 10 इंच तक जाते हैं। इसके कंद पीले भूरे रंग से सफेद रंग के तथा गूदेदार होते है। एक पौधे में कंदों की संख्या औसतन 5–30 तक हो सकती है। पत्तियाँ जमीन की सतह से ऊपर 6–13 की संख्या में लंबी एवं चपटी होती हैं, जिनकी लंबाई 30 सेमी तक होती हैं। इसकी पत्तियाँ जमीन की सतह के सामान्तर फैली हुई होती हैं। इसकी सतह चिकनी एवं किनारा हलका लहरदार होता हैं। फूल सफेद, छोटे एवं एकान्तर क्रम मे गुच्छों में लगे होते है। इसमें फल हरे पीले रंग के होते हैं। फलों की लंबाई और चौड़ाई लगभग समान होती है। फल के अंदर छोटी कटोरी नुमा आकार में बीज बहुत छोटे एवं काले रंग के रहते है। इसके कंद बड़े (5–12 सेमी.) होते हैं।
7. उपयोगी भाग – जड़ें (कंद)
8. वितरण – यह सामान्यतः मध्य प्रदेश के सभी वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
9. उपयोग – इसका उपयोग शक्तिवर्धक के रूप में किया जाता है। इसके कंदों का उपयोग गठियावात के उपचार में किया जाता है। इसकी पत्तियों का सब्जियों के रूप में भी उपयोग किया जाता है। इसकी सूखे कंदों के चूर्ण का उपयोग शुक्रवर्धन तथा यौनशक्ति बढ़ाने एवं महिलाओं एवं दुधारू पशुओं में दुग्ध बढ़ाने में किया जाता है। इसका उपयोग च्यवनप्राश बनाने मे भी किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – नवंबर माह के बाद जब इसकी पत्तियाँ एवं ऊपरी हिस्सा सूख जाता है उसके एक महीने के बाद मूसली के कंदो का विदोहन करते हैं। कुदाली की सहायता से पौधे के आस–पास कुछ दूरी से चारों तरफ खोदकर इसके कंदो को निकाल लिया जाता है। कंदों की पानी से धुलाई की जाती हैं। पानी से धोने के पश्चात इसे साफ करके धूप में सुखाते हैं। पूरी तरह सूख जाने के बाद इसका पॉलीथिन / जूट के बोरों में भंडारण कर लिया जाता है।

कंद

13. *Citrullus colocynthis* Schrad.

1. सामान्य नाम – इंद्रायण
2. वानस्पतिक नाम – *Citrullus colocynthis* Schrad.
3. कुल – *Cucurbitaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त – सितंबर
6. आकारिकी – इंद्रायण एक लता होती है जो कि बिल्कुल तरबूज की लता की तरह होती है। इसका फूल पीले रंग का एवं नर और मादा अलग–अलग होते है। इसका फल देखने में बड़ा सुंदर पर अपने कड़वेपन के लिए प्रसिद्ध है। यह नारंगी के बराबर 2–3 इंच व्यास के होते है। ये फल कच्ची अवस्था में हरे रंग का व पकने पर इनका रंग पीला हो जाता है जिसमें खरबूजे की तरह फांके होती है उन पर बहुत सी श्वेत धारियां होती है। यह फल विषैला और रेचक होता है। इसके बीज भूरे, चिकने, चमकदार, लंबे, गोल तथा चपटे होते हैं। इस बेल का प्रत्येक भाग कड़वा होता है।
7. उपयोगी भाग – फल एवं कंदील जड़
8. वितरण – मण्डला, जबलपुर, अमरकंटक, छिन्दवाड़ा, बालाघाट
9. उपयोग – अंग्रेजी और आयुर्वेदिक दवाओं में इसके सत का प्रयोग किया जाता है। इसका फल के गूदे को सुखाकर औषधि के काम में लाते हैं। इसे पित्त, उदर रोग, श्वेत कुष्ठ तथा ज्वर को दूर करने मे उपयोग मे लाया जाता है। यह पीलिया और मूत्र संबंधी व्याधियों में विशेष लाभकारी होता है ।
10. कटाई की तकनीक – इसके फलों को संग्रहित कर सुखा लिया जाता है। इसके कंदों को 2 से 3 फीट गहरा खोदकर निकाला जाता है।

14. *Colocasia esculenta* (Linn.) Schott

1. सामान्य नाम – घुईंया
2. वानस्पतिक नाम – *Colocasia esculenta* (Linn.) Schott
3. कुल – *Araceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. आकारिकी – यह एक बहुवार्षिक शाकीय पौधा है। इसकी ऊँचाई 2 से 3 फीट तक होती है परंतु इसका ऊपरी भाग गर्मियों मे सूख जाता है। कंद गर्मियों में जमीन के अंदर सुरक्षित रहते है तथा बारिश के आते ही कंद से पत्तियों का विकास प्रारंभ हो जाता है। पत्तियाँ लगभग 40 सेमी. तक लंबी होती है। आधारीय भाग पर हल्की हरी तथा ऊपरी सतह गहरे हरे रंग की होती है। पुष्पक्रम स्पेडिक्स (Spadix) के रूप में एवं हल्के हरे रंग का होता है।
6. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितबंर
7. वितरण – लगभग सभी जगहों पर इसकी खेती होती है।
8. उपयोगी भाग – पत्तियाँ एवं कंद
9. उपयोग – पर्णवृंत का जूस कान दर्द के उपचार में सहायक होता है एवं हरी पत्तीयों एवं कंद को भोजन में उपयोग में लाते है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी पत्तियाँ पीली पड़ने पर इसके कंदो को खोदकर या गहरी जुताई द्वारा निकाल लेते है, कंदो को साफ करके उसमें से पत्तियाँ अलग कर लेते है।

15. *Costus speciosus* (Koenig) Sm.

1. सामान्य नाम – केवकंद
2. वानस्पतिक नाम – *Costus speciosus* (Koenig) Sm.
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से सितंबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवार्षिक शाकीय पौधा होता है। जिसकी ऊँचाई सामान्यतः 1.5 से 2 मीटर तक होती है। इसकी जड़े कंदिल एवं रेशेदार होती है। पत्तियाँ 15 से 30 सेमी. लंबी एवं 5 से 7.5 सेमी. चौड़ी होती है जो कि एक तने पर सर्पिलाकार क्रम में व्यवस्थित होती है। फल लाल केप्सूल आकार का होता है। फूल सफेद होते है तथा वर्षाकाल में आते है। फूलों का समूह स्पाइक;चपामद्ध पुष्पक्रम में व्यवस्थित रहता है, जिनकी लंबाई 7 से 13 सेमी. तक होती है। इसके फल लाल केप्सूलनुमा होते हैं जिसके अंदर छोटे–छोटे काले रंग के बीज होते हैं।
7. वितरण – जबलपुर, पचमढ़ी, अमरकंटक, मण्डला, बालाघाट छिंदवाड़ा, सीधी आदि वन क्षेत्रों में बहुतायात पाया जाता है।
8. उपयोगी भाग – प्रकंद
9. उपयोग – चर्म रोगों तथा पाचक तंत्र संबंधी रोगों के उपचार में सहायक होता है। इसके कंदों को गठिया रोग में उपयोग में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी पत्तियॉ सूख जाने पर इसके प्रकंदो को खोदकर निकाल लेते है। कंदो को साफ करके उसमें से मिट्टी एवं बारीक जड़ अलग कर लेते है।

फूल

प्रकंद

16. *Curculigo orchioides* Geartn.

1. सामान्य नाम – काली मूसली
2. वानस्पतिक नाम – *Curculigo orchioides* Geartn.
3. कुल – *Amaryllidaceac*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह बहुवर्षीय शाकीय पौधा है जो कि तनारहित होता है। इसके कंद की बाहरी सतह भूरे रंग की होती है। कंद लंबा, बेलनाकार होता है। कंद की लंबाई 5 से 22 सेमी. तक होती है। पत्तियाँ सरल, लंबी पतली भालाकार एवं खजूर की पत्तियों के समान दिखती है। फूल गहरे पीले रंग के असीमाक्षी पुष्पक्रम में व्यवस्थित होते हैं। इसके फल चिकने, अंडाकार होते हैं। इसमें एक या कई चिकने काले रंग के बीज होते हैं। इसका कंद बाहर से काला–भूरा एवं अंदर से सफेद रंग का होता है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – यह सामान्यतः बरगी, कटनी, दमोह, छिदवाड़ा, अमरकंटक, जबलपुर, मण्डला आदि के वन क्षेत्रों में छायादार स्थानों में पाया जाता है।
9. उपयोग – इसकी जड़ों के काढ़े का एवं चूर्ण का उपयोग सामान्य कमजोरी के उपचार में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – लगभग दो वर्ष पुराने परिपक्व पौधों की कंदिल जड़ों को संग्रहण हेतु चयन करते हैं। लोहे के तेज औजार की सहायता से चयनित पौधे के चारों ओर लगभग 20–30 सेमी. के घेरे में धीरे–धीरे खुदाई कर काली मूसली की कंदिल जड़ों को निकाला जाता है। निकालने के बाद जड़ों से मिट्टी अलग कर साफ पानी से धुलाई कर ली जाती है एवं स्वच्छ जड़ों को धूप में सुखा लिया जाता है।

कंद

कंद का अंदरुनी भाग

17. *Curcuma amada* Roxb.

1. सामान्य नाम – आमा हल्दी
2. वानस्पतिक नाम – *Curcuma amada* Roxb.
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय कंदिल पौधा होती है। जिसकी पत्तियाँ गर्मी के मौसम में सूख जाती हैं परंतु जमीन के नीचे इसकी जड़ (कंद) वसंत ऋतु आने तक सुसुप्तावस्था में पड़े रहते है। वसंत ऋतु आने पर कंद से पहले फूल निकलते हैं फिर पत्तियों का निकलना प्रारंभ होता है। इससे डण्ठल (peduncle) 20–25 सेमी. लंबा निकलता है जिस पर फूल लगे रहते हैं। फूलो की पंखुड़ी सफेद होती है जिसके किनारे बैगनी–गुलाबी रंग के होते है। पूर्ण विकसित पौधे की ऊँचाई 90 सेमी. तक होती है। नीचे की पत्तियाँ आकार में छोटी एवं ऊपर की बड़ी 45 –60 सेमी लंबी एवं 18–25 सेमी. तक चौडी होती है एवं इसके किनारे नोकदार होते हैं। इसके कंद अंदर से सफेद होते है एवं इनमे कंद से कच्चे आम की खुशबू आती है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – छिंदवाड़ा, अमरकंटक, चित्रकूट आदि के वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
9. उपयोग – कंदों का उपयोग विभिन्न चर्म रोगों एवं जोड़ों के दर्द के उपचार में उपयोग किया जाता है। दमा एवं अपच के उपचार में भी प्रकदों का उपचार किया जाता है। कंदों का उपयोग गीला या सुखाकर किया जा सकता है।
10. कटाई की तकनीक – परिपक्व पौधे जिसकी पत्तियॉ सूख रही हो ऐसे पौधों के चारों ओर 50–70 सेमी. के घेरे में लगभग 1 से 1.5 फीट गहराई में कुदाली से खोदकर कंद निकाल लेते हैं। पूर्ण परिपक्व कंद को निकालकर धोकर साफ कर लेते है तथा अपरिपक्व कंदो को वापस लगा देते है।

18. *Curcuma angustifolia* Roxb.

1. सामान्य नाम – तीखुर
2. वानस्पतिक नाम – *Curcuma angustifolia* Roxb.
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा है जो सामान्यतः मिश्रित वनों में नम छायादार स्थानों पर पाया जाता है। इसकी ऊँचाई 60 से 120 सेमी. तक होती है। इसकी पत्तियाँ गर्मी के मौसम में सूख जाती हैं परंतु जमीन के नीचे इसकी जड़ (कंद) वसंत ऋतु आने तक सुसुप्तावास्था में पड़े रहते है। वसंत ऋतु आने पर कंद से पहले फूल निकलते हैं फिर पत्तियों का निकलना प्रारंभ होता है। यह तना रहित पौधा है जिसकी पत्तियां 15–60 सेमी. तक लंबी होती है। फूल सफेद होते है जिनके किनारे हल्के गुलाबी होते हैं। इसके कंद सफेद होते है एवं इनमें स्टार्च ज्यादा पाया जाता है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – छिंदवाड़ा, अमरकंटक, जबलपुर
9. उपयोग – इसके कंद स्टार्च का अच्छा विकल्प है साथ ही इसे शक्तिवर्धक, पाचक, रक्ताल्पता आदि रोगों में उपयोग मे लिया जाता है। मिठाई एवं आईसक्रीम बनाने मे भी इसका उपयोग किया जाता है। इसके आटे का उपयोग फलाहार मे भी किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – जिसकी पत्तियॉ सूख रही हो ऐसे पौधों के चारों ओर 50–70 सेमी. के घेरे में लगभग 1.5 से 2.0 फीट गहराई में कुदाली से खोदकर कंद निकाल लेते हैं। पूर्ण परिपक्व कंद को निकालकर धोकर साफ कर लेते है तथा अपरिपक्व कंदो को वापस लगा देते है।

कंद

19. *Curcuma aromatica* Salisb.

1. सामान्य नाम – वन हल्दी
2. वानस्पतिक नाम – *Curcuma aromatica* Salisb.
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितंबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय कंदिल पौधा होता है जिसकी ऊँचाई लगभग 20 से 40 सेमी. तक होती है। बसंत ऋतु में कंद से पत्तियों के आने से पहले फूल निकलता है। फूल सफेद एवं बैगनी रंग के होते है जिनके अंदर का हिस्सा पीले रंग का होता है। पत्तियाँ फूलों के निकलने के बाद में निकलती है। इसकी पत्तियों की सतह पर शिराओं के उभार स्पष्ट दिखते है। इसके पर्णवृंत की लंबाई पत्ती की लंबाई के लगभग बराबर होती है। यह पौधा वर्षा ऋतु में तेजी बढ़ता है। इसका कंद गर्मियों के मौसम में जमीन के अंदर सुसुप्तअवस्था मे रहता है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – सिवनी, छिंदवाड़ा, अमरकंटक, जबलपुर
9. उपयोग – इसके कंदों का प्रयोग सौन्दर्य प्रसाधन वाली आयुर्वेदिक एवं सिद्धा दवाईयों में होता है तथा इसके कंद का उपयोग पाचन क्रिया को ठीक करने, चोट लगने पर रक्त प्रवाह को रोकने मे किया जाता है एवं यह खून के थक्के को जमने से रोकने में भी सहायक होता है।
10. कटाई की तकनीक – जिसकी पत्तियाँ सूख रही हो ऐसे पौधों के चारों ओर 20–30 सेमी. के घेरे में लगभग 1 फीट गहराई में कुदाली से खोदकर कंद निकाल लेते हैं। पूर्ण परिपक्व कंद को निकालकर धोकर साफ कर लेते है तथा अपरिपक्व कंदो को वापस लगा देते है।

20. *Curcuma caesia* Roxb.

1. सामान्य नाम – काली हल्दी
2. वानस्पतिक नाम – *Curcuma caesia* Roxb.
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जून से अगस्त
6. आकारिकी – यह भी बहुवर्षीय शाकीय पौधा है जो कि 30 से 100 सेमी. तक ऊंचा होता है। इसके कंद बाहर से मटमैले एवं अंदर से नीले–काले रंग के होते हैं। जमीन के आधार पर इनके आकार एवं रंग में भिन्नता पाई जाती है। इसके मुख्य कंद के ऊपरी भाग से लंबी चौड़ी हरे रंग रोमरहित पत्तियाँ निकलती हैं। पत्तियाँ सामान्यतः 10 से 20 के समूह में निकलती हैं। जिनका मध्य शिरा काले बैंगनी रंग का होता है यही इसे हल्दी की अन्य प्रजातियों से अलग पहचान करने में सहायक होता है। पत्तियों का पर्णाधार सफेद क्रीम रंग का होता है। पत्तियों में सामान्तर शिराविन्यास होता है। फूल 15–20 सेमी. लंबे डंठल पर पुष्पक्रम में व्यवस्थित होते है। इनकी बाहरी पंखुडी ;इतंबजद्ध हरे रंग की होती हैं जो परिपक्व होने पर क्रीम रंग की हो जाती हैं। फूल सफेद–पीले रंग के पखुड़ियों के होते हैं पंखुड़ियों के किनारे गुलाबी–लाल रंग का किनारा होता है। फूल का निचला हिस्सा नली के आकार का होता है।
7. उपयोगी भाग – कंद एवं पत्तियां
8. वितरण – यह भारत वर्ष के उत्तर पूर्वी क्षेत्र व मध्य भारत में पाया जाता है।
9. उपयोग – यह औषधीय दृष्टि से मूल्यवान होने के कारण इसका आर्थिक महत्व ज्यादा है। इसके जड़ों एवं पत्तियों का उपयोग अस्थमा, कैंसर, लेप्रोसी (कोढ़), बुखार, घाव एवं उल्टी में उपयोग किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – पत्तियो के सूखने पर पौधों के चारों ओर 20–30 सेमी. के घेरे में लगभग 1 से 1. 5 फीट गहराई में कुदाली से खोदकर कंद निकाल लेते हैं। पूर्ण परिपक्व कंद को निकालकर धोकर साफ कर लेते है तथा अपरिपक्व कंदो को वापस लगा देते है। खेत मे या ज्यादा जगह पर लगाने से इसे गहरी जुताई कर के भी निकालते है परंतु ऐसी अवस्था मे इसमे कंदो के कटने का भय रहता है।

21. *Cyperus scariosus* R. Br.

1. सामान्य नाम – नागरमोथा
2. वानस्पतिक नाम – *Cyperus scariosus* R. Br.
3. कुल – *Cyperaceae*
4. प्रकृति – घास
5. फूलने / फलने का समय – बारहमासी पौधा है, अगस्त से अक्टूबर तक फूलता है।
6. आकारिकी – यह घास प्रजाति का पौधा है, जो प्रायः नदी नालों के किनारे पाया जाता है। जिसकी जड़ (प्रकंद) काष्ठीय, गांठदार एवं रेशेदार होती है। जड़ सुगंधित एवं भूरे काले रंग की होता है। यह पौधा सीधा, बेलनाकार, पतला तथा 40 से 60 सेमी. लंबे छोटे–छोटे सहपत्र के गुच्छों से ढंका रहता है। इसकी पत्तियाँ पतली लंबी होती हैं। इसके पुष्प छत्रक पुष्पक्रम में व्यवस्थित होते हैं। पुष्पक्रम छत्रक 8 सेमी. लंबा एवं हल्का बादामी होता है।
7. उपयोगी भाग – जड़ (प्रकंद)
8. वितरण – लगभग सभी जगहों पर नदी नालों के उथले पानी में मिल जाता है।
9. उपयोग – इसकी जड़ों का उपयोग पेट दर्द, मूत्रवर्धन मे, ज्वर, पायरिया, भूख न लगना आदि बीमारियों में होता है। इसकी जड़ों से प्राप्त तेल का उपयोग दंत मंजन, अगरबत्ती, शैम्पू, धूप आदि बनाने में होता है।
10. कटाई की तकनीक – जड़ों को पौधे से कुछ दूरी पर चारों तरफ खोदकर इसे निकाल लेते हैं। उसके छोटे–छोटे धागेनुमा रचनाऐं एवं सूखी हुई पत्तियाँ अलग कर लेते है। यदि उन्हें दूसरी जगह लगाना है तो जून–जुलाई में लगा दिया जाता है और यदि उसका प्रयोग दवाई या किसी अन्य रूप में करना है तो उसे साफ करके छायादार स्थान पर रखकर सुखाकर रख लेते हैं।

22. *Dioscorea Alata*

1. सामान्य नाम – रतालू
2. वानस्पतिक नाम – *Dioscorea alata*
3. कुल – *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अक्टूबर से दिसंबर
6. आकारिकी – यह एक लता होती है जिसकी पत्तियॉ पान की तरह परंतु अपेक्षाकृत लंबी होती है। जिसकी लंबाई 7.5 से 18 सेमी. तक होती है। पत्तियाँ सम्मुख क्रम में व्यवस्थित होती है। इसके कंद लंबाकार एवं रंग में सफेद या बैंगनी होते है। छोटे कंद प्रायः बैंगनी रंग के होते है। कंद का आकार जमीन की संरचना पर भी निर्भर करता है। परिपक्व कंद से निकलने वाली बेला मे वायवीय कंद (areal yam) भी लगते है। इन वायवीय कंदो से भी पौधे तैयार किये जा सकते है। फल कैप्सूल रूप में होते है जिसमे तीन से चार बीज होते है।
7. उपयोगी भाग – कंद, पत्तियॉ एवं वायविय कंद
8. वितरण – लगभग सभी जगह पाया जाता है तथा घरों मे भी लगाया जाता है।
9. उपयोग – कंद के लेप का उपयोग विभिन्न चर्म रोगों के उपचार एवं उच्च रक्तचाप के उपचार में किया जाता है । कंद का उपयोग मधुमेह एवं अपच के उपचार में किया जाता है। कंद, पत्तियॉ एवं वायवीय कंद का उपयोग भोजन के रुप मे भी किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधे के आसपास से खरपतवार आदि हटाकर साफ कर लेना चाहिए। पौधे की सूखी पत्तियॉ एवं तने को काटकर हटा दें उसके बाद कुदाली की मदद से लगभग 1 फीट दूरी से खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं। छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में लगा देते हैं। साथ ही परिपक्व कंदों के एक भाग को भी काटकर मिट्टी में दबा दिया जाता है जिससें अगले वर्ष पुनः नया पौधा निकलता है।

नये पौधे

23. *Dioscorea bulbifera* Linn

1. सामान्य नाम — अगीठा
2. वानस्पतिक नाम — *Dioscorea bulbifera* Linn
3. कुल — *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति — लता
5. फूलने / फलने का समय — अगस्त से सितम्बर
6. आकारिकी — यह एक बेला होती है। पत्तियाँ सरल ,आयताकार एवं वैकल्पिक क्रम में व्यवस्थित होती है फूल हरे तथा बैंगनी रंग के लटके हुए स्पाइक (spikes) के रूप में होते है। फल कैप्सूल के रूप में होते है एवं बीज पंखयुक्त (winged) होते है। परिपक्व कंद से निकलने वाली लता में वायवीय कंद (areal yam) लगते है। इन वायवीय कंद से भी पौधे तैयार किये जा सकते है।
7. उपयोगी भाग — कंद एवं वायवीय कंद (areal yam)
8. वितरण — लगभग सभी जगह पाया जाता है तथा घरों में भी लगाया जाता है।
9. उपयोग — इसके वायवीय कंदों का उपयोग भोजन के रूप में किया जाता है। साथ ही इसके कंदों का उपयोग निम्नानुसार किया जाता है:—
   - श्वसन संबंधी विकारों के उपचार में कंद का उपयोग किया जाता है।
   - मधुमेह एवं पाचन संबंधी विकारों में वायवीय कंदों उपयोग होता है।
   - कंद, पत्तियॉ एवं वायविय कंद का उपयोग भोजन के रुप में भी किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक— पौधे के आसपास से खरपतवार आदि हटाकर साफ कर लेना चाहिए। पौधे की सूखी पत्तियाँ एवं तने को काटकर हटा दें उसके बाद कुदाली की मदद से लगभग 1 फीट दूरी से खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं। छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में लगा देते हैं। साथ ही कंदों को काटकर मिट्टी मे दबा दिया जाता है जिससें अगले वर्ष पुनः नया पौधा निकलता है।

कंद

24. *Dioscorea daemona* Roxb.

1. सामान्य नाम – बैचांदी
2. वानस्पतिक नाम – *Dloscorea daemona* Roxb
3. कुल – *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति – बेला
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितंबर
6. आकारिकी – यह एक कंदिल बेला होती है जिसके कंद प्रथम वर्ष में बहुत छोटे होते है एवं जमीन के अंदर कंद हर वर्ष बढ़ते रहते हैं। 4–5 वर्ष बाद कंद का बढ़ना बंद हो जाता है तथा पुराने कंद गलकर खराब हो जाते हैं एवं नये कंद बनना चालू हो जाते हैं। बारिश के बाद कंद से ही ऊपरी पौधे का विकास होता है। इसके तने पर कांटे पाये जाते है तथा यह बेला वृक्षों का सहारा लेकर ऊपर की तरफ बढ़ती है। पत्तियाँ हल्के हरे रंग की त्रिपालित एकांतर क्रम में तने पर व्यवस्थित होती हैं। इसके फूल छोटे गुच्छे में ससीमाक्षी प्रकार के विन्यास में व्यवस्थित होते हैं। जिनका रंग हल्का हरा पीला होता है। फल केप्सूल प्रकार का होता है जो 2.5 से 5 सेमी. तक का चौकोर आकार का होता है। परिपक्व बीज पंखयुक्त होते है। बीज 2.5 सेमी. तक लंबे एवं भूरे रंग के होते है।
7. वितरण – छिंदवाड़ा, मवई, अमरकंटक, साल एवं मिश्रित वनों में पाई जाती है।
8. उपयोगी भाग – कंद
9. उपयोग – बालाघाट में ग्रामीण आदिवासियों द्वारा इसके कंद का उपयोग गुड़ के साथ चिप्स के रूप में किया जाता है। कंद के चिप्स बनाये जाते है जो गठियावात के उपचार में सहायक होता है। कंद का उपयोग शक्तिवर्धक के रूप में तथा घावों और पेट संबंधी विकारों के लिए होता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधे के आसपास से खतपतवार आदि हटाकर साफ कर लेना चाहिए। पौधे की सूखी पत्तियाँ एवं तने को काटकर हटाकर कुदाली की मदद से लगभग 30 सेमी. दूरी से क्षेत्र की खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं। छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में लगा देते हैं।

कंद

25. *Dioscorea esculenta* Burkill

1. सामान्य नाम – पीड़ी कांदा
2. वानस्पतिक नाम – *Dioscorea esculenta* Burkill
3. कुल – *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – सितम्बर से नबंवर
6. आकारिकी – यह बहुवार्षिक बेला होती है। इसका तना पतला गोल और इस पर छोटे–छोटे कांटे जोड़े में होते हैं। पौधे के निचले भाग में कांटे अधिक रहते हैं। जबकि इसके उपरी भाग में बहुत कम कांटे रहते हैं। एक पौधे में लगभग 4–20 तक कंद हो सकते हैं जो परिपक्व होने पर बेलनाकार एवं 8 से 20 सेमी. लंबे होते हैं। कंद बाहर से भूरे रंग के एवं खुरदुरे होते हैं अंदर से सफेद रंग के होते हैं। कंद के ऊपर पतले रेशेनुमा जड़ें होती है। तना गोल–गोल किसी सहारे से लिपटा रहता है। पत्तियाँ सरल एक्रांतर क्रम में व्यवस्थित होती है। पत्तियाँ दिल के आकार की 5–8 सेमी. लंबी व 6–8 सेमी. चौड़ी होती है। पत्तियों में डण्ठल होता है। जो पत्तियों की लंबाई का 1–1.5 गुना डण्ठल होता है। पुष्पक्रम एकलिंगी होता है। फल कैप्सूल जो कि 27 मिमी. लंबा 12 मिमी. गोलाई का होता है। बीज पंखयुक्त होते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – इसकी खेती बालाघाट, सागर एवं नरसिंहपुर के क्षेत्रों में की जाती है।
9. उपयोग – श्वसन संबंधी विकारों के उपचार में उपयोग किया जाता है। इसके कंद को उबालकर भोजन के रुप में खाते हैं।
10. कटाई की तकनीक – पौधे के आसपास से खतपतवार आदि हटाकर साफ कर लेना चाहिए। पौधे की सूखी पत्तियाँ एवं तने को काटकर हटाकर कुदाली की मदद से लगभग 30 सेमी. दूरी से क्षेत्र की खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं। छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में लगा देते हैं।

कंद

26. *Dioscorea sp.*

1. सामान्य नाम – डोरीकांदा
2. वानस्पतिक नाम – *Dioscorea sp.*
3. कुल – *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर
6. आकारिकी – इसके कंदों को 1 से 1.5 मीटर तक लंबा देखा गया है। इसके कंदों पर बालनुमा पतली जड़ें फैली हुई होती हैं इसके कंद मजबूत रेशेदार होते है। इसकी पत्तियाँ सरल 10–12 सेमी. लंबी एवं 6–8 सेमी. चौड़ी दीर्घवृत्तीय, पर्णवृन्तयुक्त (डण्ठल) एवं पान के आकार की होती हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – होशंगाबाद के वन क्षेत्रों में मिलता है।
9. कटाई की तकनीक – जमीन के अंदर इसके कंद जमीन के समानांतर वृध्दि करते है अतः पौधे की सूखी पत्तियाँ एवं तने को काटकर हटाकर कुदाली की मदद से धीरे–धीरे कंद के दोनो तरफ खोदते हुए कंद की लंबाई के क्षेत्र की खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं। बड़े कंदो को काटकर पौधे को एवं छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में गड़ा देते हैं।

27. *Dioscorea spp.*

1. सामान्य नाम – तीन पत्ती कंद
2. वानस्पतिक नाम – *Dioscorea spp.*
3. कुल – *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितंबर
6. आकारिकी – इसका तना खुरदुरा होता हैं। इसकी पत्तियाँ डण्ठलयुक्त होती है तथा इसमें तीन पत्रक होते है। पत्तियाँ पतली होती है जिसकी निचली सतह हल्के हरे रंग की तथा ऊपरी सतह गहरे हरे रंग की होती है। इसके वायवीय कंद एकल, छोटे एवं 3 से 5 सेमी. लंबे होते है। इसके कंद छोटे 8 से 15 सेमी. तक पाये गये हैं। जो कि संख्या में 2 से 3 तक होते हैं। इन पर छोटे– छोटे जड़े होती हैं। ऊपर से यह गेहुंआ लाल तथा अंदर से सफेद रंग का होता है।
7. वितरण – बैतूल के मिश्रित वनों में पाया गया है।
8. उपयोगी भाग – कंद
9. उपयोग – इसके कंद का उपयोग भोजन एवं गठियावात से संबंधित रोगों के रूप में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधे के आसपास से खतपतवार आदि हटाकर साफ कर लेना चाहिए। पौधे की सूखी पत्तियाँ एवं तने को काटकर हटाकर कुदाली की मदद से लगभग 30 सेमी. दूरी से क्षेत्र की खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं साथ ही छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में लगा देते हैं।

कंद

28. *Dioscorea spp.*

1. सामान्य नाम – दुधी कांदा
2. वानस्पतिक नाम – *Dioscorea spp.*
3. कुल – *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितंबर
6. आकारिकी – इसका तना बेलनाकार, चिकना होता हैं। इसकी पत्तियाँ सरल 8 से 15 सेमी. लंबी एवं 2 से 5 सेमी. चौड़ी दीर्धवृत्तीय, पर्णवृन्तयुक्त (डण्ठल) एवं नीचे से अंडाकार गोलाकार या नुकीली होती हैं। इसके किनारे मोटे गूदेदार होते हैं। पत्तियों में 9–10 शिराएं होती हैं। फूल एकलिंगी होते हैं जो पत्तियों के अक्ष से निकली हुई स्पाइकलेट्स में स्पाइक पुष्पक्रम में व्यवस्थित होते हैं। इसके फूल छोटे सफेद, (हरे पीले) रंग के होते हैं। फल चिकने, त्रिकोणीय 20 X 30 मिमी. के केप्सूल होते हैं।
7. वितरण – छिंदवाड़ा, मवई, जबलपुर, अमरकंटक के साल एवं मिश्रित वनों में पाई जाती है।
8. उपयोगी भाग – कंद
9. उपयोग – ग्रामीण आदिवासियों द्वारा इसके कंद का भोजन के रूप में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधे के आसपास से खतपतवार आदि हटाकर साफ कर लेना चाहिए। पौधे की सूखी पत्तियाँ एवं तने को काटकर हटाकर कुदाली की मदद से लगभग 30 सेमी. दूरी से क्षेत्र की खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं। छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में लगा देते हैं।

एक वर्ष तक के पौधे एवं 3 से 4 वर्ष के पौधे का कंद

29. *Dioscorea pentaphylla* Linn.

1. सामान्य नाम – डुकरबेला, सुअरकंद
2. वानस्पतिक नाम – *Dioscorea Pentaphylla* Linn.
3. कुल – *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय बेला होती है। इसकी पत्तियाँ संयुक्त एवं पांच पत्रक, हस्ताकार होती है। पत्तियाँ एकान्तर क्रम में घुमावदार तने के ऊपर व्यवस्थित होती हैं। आमतौर पर यह जंगलों में पाया जाता है एवं वन्य जीवों द्वारा इसके कंदों को खाया जाता है। जंगलों के आसपास रहने वाले ग्रामवासियों द्वारा इसे खोदकर औषधि के रूप में उपयोग में लाते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – यह सामान्यतः छिंदवाड़ा, मवई, जबलपुर, अमरकंटक के जंगलों में पाया जाता है।
9. उपयोग – इसके कंदों का उपयोग दर्दनाशक के रूप मे एवं चर्मरोग में किया जाता है। पौधे के रस का उपयोग शारीरिक सूजन कम करने में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधे की सूखी पत्तियाँ एवं तने को काटकर हटाकर कुदाली की मदद से लगभग 30 सेमी. दूरी से क्षेत्र की खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं। छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में लगा देते हैं।

कंद

30. *Dioscorea sp.*

1. सामान्य नाम – गराडू
2. वानस्पतिक नाम – *Dioscorea sp.*
3. कुल – *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह शकरकंद के समान दिखता है। इसकी लंबाई 1.5 से 2 फीट तक होती है। इसकी नई पत्तियाँ बैंगनी रंग की होती है तथा बाद में गहरे रंग की हो जाती है। इसकी बेला एवं पत्तियाँ रतालू के समान होती है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – जबलपुर, छिंदवाड़ा एवं मालवा क्षेत्र में इसकी खेती की जाती है।
9. उपयोग – इसके कंदों को उबालकर या तलकर खाया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधे की सूखी पत्तियाँ एवं तने को काटकर हटाकर कुदाली की मदद से लगभग 30 सेमी. दूरी से क्षेत्र की खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं। छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में लगा देते हैं।

कंद

31. *Dioscorea wallichii* Hook. f.

1. सामान्य नाम – गिरची कांदा
2. वानस्पतिक नाम – *Dioscorea wallichii* Hook. f.
3. कुल – *Dioscoreaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितंबर
6. आकारिकी – इसका तना बेलनाकार, चिकना होता हैं। इसकी पत्तियाँ सरल, चिकनी एवं 8 से 10 सेमी. लंबी एवं 6 से 10 सेमी. चौड़ी हो सकती है। पत्तियाँ लंबे पर्णवृन्तयुक्त (डण्ठलयुक्त) होती हैं तथा यह पान के समान दिखती हैं तथा एक दूसरे के विपरीत दिशा में निकलती हैं। पत्तियों में 9–10 शिराएं होती हैं। फूल एकलिंगी होते हैं जो पत्तियों के अक्ष से निकली हुई स्पाइकलेट्स में स्पाइक पुष्पक्रम में व्यवस्थित होते हैं। इसके कंद हल्के गेहुआ रंग के होते हैं जो कि छीलने पर अंदर से सफेद रहते हैं तथा इनमें चिकनापन बहुत ज्यादा होता है। कंद का आकार पौधे के उम्र के साथ बढ़ता जाता है जोकि 1 मीटर तक लंबा हो सकता है।
7. वितरण – छिंदवाड़ा, मवई, अमरकंटक के साल एवं मिश्रित वनों में पाया गया है।
8. उपयोगी भाग – कंद
9. उपयोग – ग्रामीण आदिवासियों द्वारा इसके कंद का भोजन के रूप में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधे के आसपास से खतपतवार आदि हटाकर साफ कर लेना चाहिए। पौधे की सूखी पत्तियाँ एवं तने को काटकर हटाकर कुदाली की मदद से लगभग 30 सेमी. दूरी से क्षेत्र की खुदाई कर कंदों को निकाल लेते हैं। तथा तने के साथ वाले हिस्से को वापस जमीन में लगा दिया जाता है साथ ही छोटे अपरिपक्व कंदों को पुनः मिट्टी में लगा देते हैं।

32. *Elephantopus scaber*

1. सामान्य नाम – वन गोभी, वन तम्बाकु
2. वानस्पतिक नाम – *Elephantopus scaber*
3. कुल – *Asteraceac*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह बहुवर्षीय शाकीय पौधा होता है जिसकी ऊँचाई 20 से 30 सेमी. तक होती है। पत्तियाँ हल्के हरे रंग की होती है तथा जड़ के पास से ही से निकलती है एवं जमीन के ऊपर गोलाई में फैली रहती हैं। पत्तियाँ अंडाकार तथा दांतेदार होती है। एक डण्ठल पर पुष्पक्रम गुच्छे में बिखरे हुए छत्र की तरह होते है। इसके फूल बहुत छोटे 2–5 के गुच्छे में होते है। इसके फल रोयेदार होते है।
7. वितरण – यह मध्य प्रदेश में लगभग सभी वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
8. उपयोगी भाग – जड़ एवं पत्तियाँ
9. उपयोग – जड़ बलवधर्क स्वरूप होती है। पत्तियों के लेप का उपयोग चर्म रोगों के उपचार में किया जाता है। पत्तियों एवं जड़ों का सेवन मधुमेह के उपचार में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके पौधे को पूरी तरह से उखाड़कर जड़ को धो लेते हैं तथा औषधि के रुप में उपयोग में लाते हैं।

33. *Eulophia nuda* Lindl.

1. सामान्य नाम – अमरकंद, वन सिघाड़ा
2. वानस्पतिक नाम – *Eulophia nuda* Lindl.
3. कुल – *Ochidraceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त –अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय पौधा है। जिसके कंद गर्मीयों मे जमीन के अंदर सुसुप्ताअवस्था में रहते हैं, जैसे ही बारिश होती है, इसमें अंकुरण प्रारंभ हो जाता है। इसमें 3–4 पत्तियाँ होती है। पत्तियों की लंबाई 20 से 30 सेमी तक तथा मध्य मे चौड़ाई 3 से 8 सेमी तक होती है। अगस्त–सितंबर माह में इनमें मध्य से एक शाखा निकलती है जिसमें फूल एवं फल लगते हैं इसके फूल सफेद रंग के तथा गुच्छे में होते है। इसका फल कलिहारी की तरह केप्सूलनुमा होता है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – अमरकंटक, बालाघाट, छिंदवाड़ा, शहडोल, सिवनी आदि वन क्षेत्रों में मिलता है।
9. उपयोग – इसका कंद मधुर, चिकना, स्वास्थयवर्धक होता है। गले में तपेदिक के कारण ट्यूमर, सूजन, अलसर, मुंहासे, वात एवं कफ में इसका प्रयोग किया जाता है। पेट के कीड़ों को मारने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधों का ऊपरी भाग सूख जाने पर कंदों को कुदाली या खुरपी की सहायता से खुदाई कर प्राप्त कर लेते हैं।

फूल

फल

कंद

34. *Flemingia nana* (Roxb.) Baker.

1. सामान्य नाम – भैंसाताड़
2. वानस्पतिक नाम – *Flemingia nana* (Roxb.) Baker.
3. कुल – *Fabaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जून से सितबंर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीक पौधा होता है जो कि 10 से 30 सेमी. ऊंचा होता है। इसमें पत्तियाँ अरहर की तरह तीन पत्रक होती है परंतु आकार में बड़ी होती है। इसकी जड़ें मूसलाकार एवं लंबी होती है जोकि कंद के समान दिखती है। इसमें छोटे–छोटे लाल, गुलाबी रंग रेसीम पुष्पक्रम में व्यवस्थित फूल होते हैं। इसकी फल्लियां छोटी एवं फूली हुई होती हैं जिसमें 1 से 4 तक बीज होते हैं।
7. उपयोगी भाग – जड़
8. वितरण – यह मध्य प्रदेश के सभी वन क्षेत्रों में पाया जाता है, परंतु इसकी उपलब्धता बहुत कम है।
9. उपयोग – इसकी जड़ों का उपयोग शक्तिवर्धक दवाइयों में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी जड़ें काफी गहरी होती है। अतः इसे सावधानी पूर्वक गहरी खुदाई करके निकाला जाता है।

35. *Globba marantina* L

1. सामान्य नाम – जंगली अदरक (अमरकंटक)
2. वानस्पतिक नाम – *Globba marantina* L
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – सिंतबर से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह सीधा शाकीय पौधा होता है जोकि गर्मीयों मे सूख जाता है। इसकी ऊँचाई लगभग 50 सेमी. 70 सेमी. तक होती है। इसका तना पतला होता है। इसकी पत्तियाँ अदरक के समान दिखती है परंतु अपेक्षाकृत चौड़ी होती है। इसके फूल पीले रंग के 2 से 3 सेमी. लंबे होते हैं तथा गुच्छों में लगे होते है। फूल का बाहरी आवरण त्रिपालित होता है। सहपत्र हरे चौड़े एवं 1–2 सेमी लंबे होते हैं और एक सहपत्र पर एक फूल लगता है। पुष्प दलपुंज 14 मिमी. लंबा जिसका निचला हिस्सा ट्यूब के आकार एवं पंखुडियां छोटे पीले रंग की होती हैं। फल सफेद एवं मोतीनुमा होते है जिनकी सतह धारीदार होती है। फल केप्सूल आकार के अंडाकार रोमरहित होते हैं।
7. उपयोगी भाग – जड़ या कंद
8. वितरण – सामान्यतः यह साल के वनों में पाया जाता है। मध्य प्रदेश में अमरकंटक एवं पचमढ़ी के वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
9. उपयोग – कंद का उपयोग दमा, खांसी, गठियावात, चर्मरोग आदि मे किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – गर्मियों में पौधों के ऊपरी भाग सूखने पर कंद को खोदकर निकाल लिया जाता है। कंद को खोदकर लगभग एक तिहाई हिस्सा वापस उसी स्थान पर लगा देना चाहिये जिससे अगले वर्ष पुनः कंद प्राप्त हो सके।

फूल

फल

36. *Globba racemosa* (Sm.) Gagnep

1. सामान्य नाम – जंगली अदरख
2. वानस्पतिक नाम – *Globba racemosa* (Sm.) Gagnep
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से अगस्त
6. आकारिकी – यह भी उपरोक्तानुसार कंद युक्त पौधा है। इसकी ऊँचाई 1 मी. तक होती है। पत्तियाँ लंबी चौड़ी आगे से नुकीली भालाकार होती है। पत्तियों के दोनों सतह पर रोये होते हैं। पत्तियों का आधार पतला एवं ऊपरी हिस्सा चौड़ा होता है। पत्तियों में बहुत छोटे पर्णवृन्त होते हैं। इसके फूल पीले रंग के पतले लंबे 8–20 सेमी. लंबी डंडियों में निकलते हैं। फल छोटे, चिकने हरे रंग के कैप्सूल आकार के होते है।
7. उपयोगी भाग – जड़ या कंद
8. वितरण – सामान्यतः यह भी साल के वनों में पाया जाता है। मध्य प्रदेश में अमरकंटक एवं पचमढ़ी के वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
9. उपयोग – कंद का उपयोग दमा, खांसी, गठियावात, चर्मरोग आदि मे किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – गर्मियों में पौधों के सूखने पर कंद को खोदकर निकाल लिया जाता है। कंद को खोदकर लगभग एक तिहाई हिस्सा वापस उसी स्थान पर लगा देना चाहिये जिससे अगले वर्ष पुनः कंद प्राप्त हो सके।

फूल

फल

37. *Gloriosa superba* Linn.

1. सामान्य नाम – कलिहारी
2. वानस्पतिक नाम – *Gloriosa superba* Linn.
3. कुल – *Liliaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से नवंबर
6. आकारिकी – यह मौसमी कंदित बेला होती है जो बारीश के साथ उगती है तथा दिसंबर–जनवरी माह तक सूख जाती है। इसका तना गोल, चिकना एवं मजबुत होता है। पत्तियाँ बिना डण्ठल की होती है। पत्तियों का अग्रभाग घुमावदार होता है जिसकी सहायता से यह अन्य पौधों का सहारा लेकर ऊपर की तरफ बढ़ता है। इसके फूल पीले लाल रंग के घुमावदार पंखुड़ियों वाले होते है जो बाद में पूर्णतः लाल रंग में परिवर्तित हो जाते है। फल कैप्सूल के रूप में 2–3 सेमी. लंबे होते है। जिसके प्रत्येक भाग में लगभग 6 से 8 बीज होते है। जो गोलाकार, लाल अथवा नांरगी रंग के दिखते है तथा साफ करने पर अंदर से काले मोतीनुमा होते है। कंद अंग्रेजी के V आकार के होते है जिसकी एक भुजा छोटी होती है।
7. वितरण – छिंदवाड़ा ,जबलपुर ,कटनी ,बोरी, अमरकंटक लगभग संपूर्ण मध्य प्रदेश मे मिलता है। यह खेतों की मेढ पर भी मिलता है परंतु इनकी उपलब्धता बहुत ही कम हो गयी है।
8. उपयोगी भाग – कंद एवं पत्तियाँ
9. उपयोग – कलिहारी का कंद चर्म रोग, वात रोग के उपचार में उपयोगी होता है । कंद एवं पत्तियाँ सर्पदंश के उपचार में उपयोगी होते है ।
10. कटाई की तकनीक – यह बहुवार्षिक पौधा होता है। इसका फल जब गहरे हरे रंग में परिवर्तित होकर ऊपरी सतह सिकुड़ने लगती है। उस समय इसकी कटाई की जाती है। खेत मे रोपण के लगभग 170–180 दिनों के बाद फलों की कटाई की जाती है एवं उन्हे 10–15 दिनों तक छाँव में सुखाया जाता है। इसके कंद को 3–5 साल के रोपण के बाद खुदाई करके निकालकर, साफ करके छोटे–छोटे टुकड़े करके छांव में सुखाया जाता है।

फूल

फल

बीज

कंद

38. *Habenaria marginata*

1. सामान्य नाम – वृद्धि भेद
2. वानस्पतिक नाम – *Habenaria marginata*
3. कुल – *Orchidaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई–अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा होता है, जिसकी ऊँचाई 20–80 सेमी. तक होती है। इसके कंद छोटे होते हैं। 4 से 6 पत्तियाँ जमीन की सतह के पास तने पर चारो तरफ जमीन के समानांतर लगी रहती हैं तथा जमीन पर फैलती है। पत्तियाँ अंडाकार, दीर्घवृत्तीय एवं मध्य में चौड़ी एवं किनारों पर सकरी होती हैं। पौधे के मध्य से पुष्पवृंत निकलता है, जिस पर कई पीले रंग के फूल व्यवस्थित होते हैं। बाहय दल पीले रंग के चौड़े होते हैं एवं बाह्य दल के सभी दल समान आकार के नहीं होते हैं। दलपुंज हरे–पीले रंग के होते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – अमरकंटक, छिंदवाड़ा, शहडोल, सिवनी, बैतूल आदि वन क्षेत्रों नमी वाले स्थानों में मिलता है।
9. उपयोग – इसका कंद मधुर, चिकना, स्वास्थवर्धक होता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधों का ऊपरी भाग सूख जाने पर कंदों को कुदाली की सहायता से खुदाई कर प्राप्त कर लेते हैं।

39. *Habenaria furcifera* Lindl.

1. सामान्य नाम – वृद्धि भेद
2. वानस्पतिक नाम – *Habenaria Furcifera* Lindl.
3. कुल – *Orchidaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई–अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवार्षीक शाकीय पौधा होता है जिसकी ऊँचाई 30–60 सेमी. होती है इसके कंद छोटे होते हैं। पत्तियाँ 15 से 18 सेमी. लंबी एवं मध्य मे 4–5 सेमी. चौड़ी होती हैं पत्तियों की संख्या 3 से 6 होती है, जो अंडाकार, दीर्घवृत्तीय एवं तने के पास चौड़ी एवं ऊपर से पतली होती हैं। पत्तियाँ जमीन की सतह के पास तने पर गोलाई पर लगी रहती हैं पौधे के मध्य से पुष्पवृंत निकलता है, यह 30–35 सेमी. लंबा होता है। सहपत्र 11–12 मिमी. लंबे एवं 2.5–3 मिमी. चौड़े भालाकार होते हैं। जिस पर कई हरे सफेद रंग के सपुष्पवृंत फूल असीमाक्षी पुष्पक्रम में व्यवस्थित होते हैं। बाह्य दल हरे रंग के चौड़े अंडाकार होते है एवं बाह्य दल के सभी दल समान आकार के नहीं होते हैं। दलपुंज हरे पीले रंग के 5 मिमी. लंबे 2.5 मिमी. चौड़े होते हैं। फल केप्सूलनुमा बेलनाकार किंतु दोनों सिरों पर पतले होते हैं।
7ण उपयोगी भाग – कंद
8ण वितरण – अमरकंटक, बालाघाट, छिंदवाड़ा, शहडोल, सिवनी, बैतूल आदि वन क्षेत्रों नमी वाले स्थानो में मिलता है।
9ण उपयोग – इसका कंद मधुर, चिकना, स्वास्थवर्धक होता है।
10ण कटाई की तकनीक – पौधों का ऊपरी भाग सूख जाने पर कंदों को कुदाली की सहायता से खुदाई कर प्राप्त कर लेते हैं।

40. *Habenaria palntaginea* (Roxb.) Wall. ex Lindl.

1. सामान्य नाम – वृद्धि भेद
2. वानस्पतिक नाम – *Habenaria plantaginea* (Roxb.) Wall. ex Lindl.
3. कुल – *Orchidaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई–अगस्त
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा होता है जिसकी ऊँचाई 20–30 सेमी. होती है। इसका जमीन से ऊपर का भाग नवंबर माह तक सूख जाता है किंतु इसका कंद जमीन के अंदर सुसुप्तावास्था में पड़ा रहता है। इसकी पत्तियाँ सरल, अंडाकार ऊपर से पतली एवं तने पर एक अभिमुख क्रम में व्यवस्थित होती है। फूल घने गुच्छे में 5–10 सेमी. लंबे पुष्पवृंत पर लगे रहते हैं। पुष्प पुष्पवृंत युक्त होते हैं। बाह्य दल सफेद रंग का होता है। पखुडियां तीन भागों में विभक्त होती हैं जिसमें बीच वाला भाग लंबा होता है। फल केप्सूल आकार के होते हैं जिन पर धारियां होती हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – अमरकंटक, बालाघाट, छिंदवाड़ा, शहडोल, सिवनी, बैतूल आदि वन क्षेत्रों नमी वाले स्थानो में मिलता है।
9. उपयोग – इसका कंद मधुर, चिकना, स्वास्थवर्धक होता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधों का ऊपरी भाग सूख जाने पर कंदों को कुदाली की सहायता से खुदाई कर प्राप्त कर लेते हैं।

कंद

41. *Habenaria spp.*

1. वानस्पतिक नाम – *Habenaria spp.*
2. कुल – *Orchidaceae*
3. प्रकृति – शाकीय
4. फूलने / फलने का समय – जुलाई–अगस्त
5. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा होता है। जिसकी ऊँचाई लगभग 30–50 सेमी. तक होती है। इसका जमीन से ऊपर का भाग नवंबर माह तक सूख जाता है किंतु इसका कंद जमीन के अंदर सुसुप्तावास्था में पड़ा रहता है। इसकी पत्तियाँ सरल, मुख्य डण्ठल से चिपककर निकलती है तथा एकांतर क्रम में व्यवस्थित होती है। पत्तियाँ भालाकार होती है। फूल घने गुच्छे में 15–18 सेमी. लंबे पुष्पवृंत पर लगे रहते हैं। पुष्प पुष्पवृंत युक्त होते हैं। बाह्य दल सफेद रंग का होता है। पंखुडियाँ पतले–पतले भागों में विभाजित होती है। फल केप्सूल आकार के होते हैं जिन पर धारियां होती हैं।
6. उपयोगी भाग – कंद
7. वितरण – यह सीधी एवं छिन्दवाड़ा के वनक्षेत्रों में पाया गया है।
8. उपयोग – इसका कंद मधुर, चिकना, स्वास्थवर्धक होता है।
9. कटाई की तकनीक – पौधों का ऊपरी भाग सूख जाने पर कंदों को कुदाली की सहायता से खुदाई कर प्राप्त कर लेते हैं।

42. *Habenaria spp.*

1. वानस्पतिक नाम – *Habenaria spp.*
2. कुल – *Orchidaceae*
3. प्रकृति – शाकीय
4. फूलने / फलने का समय – जुलाई–अगस्त
5. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा होता है जिसकी ऊँचाई लगभग 25–40 सेमी. तक होती है। इसका जमीन से ऊपर का भाग नवंबर माह तक सूख जाता है किंतु इसका कंद जमीन के अंदर सुसुप्तावास्था में पड़ा रहता है। इसकी पत्तियाँ सरल एवं पर्णवृंतरहित होती है तथा मुख्य डण्ठल से लगकर निकलती है। पत्तियाँ एकांतर क्रम में व्यवस्थित होती है तथा पत्तियाँ भालाकार होती है। फूल 8–20 के गुच्छे में होते हैं जो कि डण्ठल पर विरल रूप में व्यवस्थित रहते हैं। पुष्प पुष्पवृंत युक्त होते हैं बाह्य दल सफेद रंग का होता है।
6. उपयोगी भाग – कंद
7. वितरण – यह सीधी, बैतूल एवं छिन्दवाड़ा के वनक्षेत्रों में नमी वाले क्षेत्र मुख्यतः बांस के भिर्रे एवं बड़ वृक्षों के आसपास पाये जाते हैं।
8. उपयोग – इसका कंद मधुर, चिकना, स्वास्थवर्धक होता है।
9. कटाई की तकनीक – पौधों का ऊपरी भाग सूख जाने पर कंदों को कुदाली की सहायता से खुदाई कर प्राप्त कर लेते हैं।

43. *Habenaria spp.*

1. वानस्पतिक नाम – *Habenaria spp.*
2. कुल – *Orchidaceae*
3. प्रकृति – शाकीय
4. फूलने / फलने का समय – जुलाई–अगस्त
5. आकारिकी – यह भी एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा है जिसकी ऊँचाई लगभग 60–110 सेमी. तक होती है। इसका जमीन से ऊपर का भाग नवंबर माह तक सूख जाता है किंतु इसका कंद जमीन के अंदर सुसुप्तावास्था में पड़ा रहता है। इसकी पत्तियाँ सरल एवं पर्णवृंतरहित होती है तथा मुख्य डण्ठल से लगकर एकांतर क्रम में निकलती है तथा पत्तियाँ मध्य में चौड़ी तथा दूरस्थ किनारों पर नोकदार होती हैं। फूल गुच्छे में होते हैं जो कि डण्ठल पर सघन रूप में व्यवस्थित रहते हैं। पुष्प पुष्पवृंत युक्त होते हैं बाह्य दल सफेद रंग का होता है।
6. उपयोगी भाग – कंद
7. वितरण – यह मण्डला के मवई के वनक्षेत्रों में पाया गया है।
8. उपयोग – इसका कंद मधुर, चिकना, स्वास्थवर्धक होता है।
9. कटाई की तकनीक – पौधों का ऊपरी भाग सूख जाने पर कंदों को कुदाली की सहायता से खुदाई कर प्राप्त कर लेते हैं।

कंद

44. *Habenaria spp.*

1. वानस्पतिक नाम – *Habenaria spp.*
2. कुल – *Orchidaceae*
3. प्रकृति – शाकीय
4. फूलने / फलने का समय – जुलाई–अगस्त
5. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा है। इसकी ऊँचाई लगभग 20–40 सेमी. तक होती है इसका जमीन से ऊपर का भाग नवंबर माह तक सूख जाता है किंतु इसका कंद जमीन के अंदर सुसुप्तावास्था में पड़ा रहता है। इसके पौधे बड़े वृक्षों के आसपास जहां जमीन में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा अधिक होती है वहां गुच्छे में पाये जाते हैं। इसकी सामान्यतः 4 पत्तियाँ होती हैं जो कि एक दूसरे से लगभग 90 के अंश का कोण बनाते हुए व्यवस्थित होती हैं। पत्तियाँ सरल एवं पर्णवृंतरहित होती है। पत्तियाँ अपेक्षाकृत लंबी एवं भालाकार होती है। फूल छोटे एवं 10 से 20 के गुच्छे में होते हैं। जो कि डण्ठल पर विरल रूप में व्यवस्थित रहते हैं। पुष्प पुष्पवृंत युक्त होते हैं बाह्य दल सफेद रंग का होता है।
6. उपयोगी भाग – कंद
7. वितरण – यह जबलपुर के पिपरिया एवं पनागर के वनक्षेत्रों में पाया गया है।
8. उपयोग – इसका कंद मधुर एवं स्वास्थवर्धक होता है।
9. कटाई की तकनीक – पौधों का ऊपरी भाग सूख जाने पर कंदों को कुदाली की सहायता से खुदाई कर प्राप्त कर लेते हैं।

45. *Hedichium coronarium* Koen.

1. सामान्य नाम – गुलबकावली
2. वानस्पतिक नाम – *Hedichium coronarium* Koen.
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जून से नवंबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय पौधा होता है जिसकी ऊँचाई 100 से 200 सेमी. तक होती है। इसके पत्ते सामान्यतः लगभग 30 से 40 सेमी. लंबे, भालाकार, चिकने और तने पर दो पक्तियों में पाये जाते हैं। तने के शीर्ष पर कभी–कभी 6से8 ईंच लंबी सघन पुष्प मंजरी बनती है। जिसमें पुष्प आवृन्त और सफेद तथा सहपत्र (Bract) हरे रंग के होते हैं। इसके फूल एक बडे केप्सूल में उगते है। फूल आकार मे बड़े, सफेद रंग के एवं खुशबुदार होते हैं। फूल के केप्सूल को दबाने पर इसमे से पानी निकलता है। इसके प्रकंद लंबे और गांठदार होते हैं। इसके प्रकंद तेज गंधयुक्त होते हैं। प्रकंद बाहर से मटमैले एवं अंदर से सफेद रंग के होते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद, प्रकंद
8. वितरण – मध्य प्रदेश मे अमरकंटक, सीधी एवं पचमढ़ी के वन क्षेत्रों मे पाया जाता।
9. उपयोग – आयर्वेद में इसे कटु, कड़वा, स्वाद, मुख के दुर्गंध नष्ट करने वाली वमन में उपयोगी माना गया है। इसके कंद का उपयोग खांसी, हिचकी, दमा, सूजन, दर्द आदि में भी होता है। फूलों का अर्क आखों के लिये उपयोगी माना गया है।
10. कटाई की तकनीक – दिसंबर–जनवरी माह मे इसके प्रकंदो को खोदकर निकाल लेते है। प्रकंदो को साफ करके उसमें से मिट्टी एवं बारीक जड़ अलग कर लेते है। इसके फूल निकालकर आसवन विधि से उसका अर्क निकाल लेते है।

46. *Iphigenia indica* (L.) A. Gray ex Kunth

1. सामान्य नाम – घासलीली, भुईचक
2. वानस्पतिक नाम – *Iphigenia indica* (L.) A. Gray ex Kunth
3. कुल – *Colchicaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जून से जुलाई
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा है। जो 20–50 सेमी. ऊंचा होता है। इसकी पत्तियाँ घांस के समान होती है। जो लंबाई में 7 से 15 सेमी. लंबी और 8 से 15 मिमी. चौड़ी होती है। पत्तियों का मध्य शिरा उभरा हुआ होता है। फूल गहरे बैंगनी रंग के 1–6 फूलों के गुच्छों में लगते हैं। फूलों का डण्ठल 2–4 सेमी लंबा होता है। इसके फूलों में बाह्य दल पुंज तथा दलों में अंतर स्पष्ट नहीं होता अतः इसमें 6 जमंचंसे होते हैं। जो भूरे रंग के भाले के आकार के होते हैं। इसमें 6 फैले हुए पुकेंसर होते हैं। अण्डाशय अंडाकार होता है इसमें वर्तिका नहीं पाई जाती है। इसके फल केप्सूल आकार के होते हैं जिनका निचला सिरा पतला होता है। इसमें एक फल में अनेक भूरे रंग के बीज पाये जाते हैं। इसका कंद एक कली के लहसुन की तरह होता है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – यह जबलपुर में प्राप्त हुआ था।
9. उपयोग – दमा, रेबीज, श्वांस रोग, सर्पदंश आदि मे।
10. कटाई की तकनीक – इसके कंद आसानी से खोदकर निकाले जा सकते है।

47. *Leea macrophylla* Roxb.

1. सामान्य नाम – हथपन
2. वानस्पतिक नाम – *Leea macrophylla* Roxb.
3. कुल – *Vitaceae*
4. प्रकृति – झाड़ीनुमा
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से सितंबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय झाड़ीनुमा पौधा होता है जिसकी ऊँचाई 1 से 1.5 मी. तक होती है। जिसकी जड़ें कंदिल होती हैं। पत्तियाँ बड़ी, चौड़ी, सागौन की पत्तियों की तरह दिखती है। पत्तियों पर शिरायें उभरी हुई होती है। पौधे के ऊपरी भाग में इसके फूल गुच्छें में लगते हैं। फूल छोटे एवं सफेद रंग के होते है तथा समान पुष्पक्रम में लगते हैं। फल गोल हरे रंग के होते है जो परिपक्व होने पर काले रंग के होते हैं। जिसमें 1 से 4 तक बीज रहते हैं।
7. वितरण – मध्यप्रदेश के खण्डवा, पातालकोट, दमोह , अमरकंटक, बालाघाट के मिश्रित वनों एवं नमी वाले स्थानों में पाया जाता है।
8. उपयोगी भाग – कंद एवं पत्तियाँ
9. उपयोग – पौधे की पत्तियों का उपयोग चर्म रोग के उपचार में किया जाता है। कंद रक्त के स्त्राव को रोकने में सहायक होते हैं और पत्तियों के रस एवं कंद के चूर्ण का उपयोग गठियावात एवं संधिशोध के उपचार में भी किया जाता है। इसके कंद का चूर्ण शाक्तिवर्धक के रूप में एवं कमर दर्द से संबंधित रोगों में उपयोग मे लिया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – पौधों के ऊपरी हिस्से के सूखने के बाद इसके कंदों को कुदाली से खोदकर निकाल लिया जाता है। बड़े कंदों को उपयोग में लेकर छोटे कंदों को तने के साथ लगे रहने देते है एवं इसे वापिस उस स्थान में लगा दिया जाता है।

कंद

48. *Leea crispa* Linn.

1. सामान्य नाम – हसियॉ ढापर
2. वानस्पतिक नाम – *Leea crispa* Linn.
3. कुल – *Vitaceae*
4. प्रकृति – झाड़ी
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से सितंबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय झाड़ीनुमा पौधा है जिसकी ऊँचाई 1 से 2.5 मीटर तक होती है। इसकी जड़ें कंदिल होती हैं। पत्तियाँ चौड़ी, धारीदार एवं संयुक्त होती है तथा किनारों पर नुकीली होती हैं। फूल हरे–सफेद रंग के छत्र के समान पुष्पक्रम में लगते हैं। फल गोल हरे रंग के होते है जो परिपक्व होने पर काले रंग के होते हैं। प्रत्येक फल में 4–6 बीज रहते हैं।
7. वितरण – मध्यप्रदेश में अमरकंटक, बालाघाट, पातालकोट, दमोह के मिश्रित वनों एवं नमी वाले स्थानों में पाया जाता है।
8. उपयोगी भाग – कंद एवं पत्तियाँ
9. उपयोग – कंद रक्त के स्त्राव को रोकने में सहायक होता है। कंद के चूर्ण एवं पत्तियों के रस का उपयोग गठियावात एवं संधिशोध के उपचार में किया जाता है
10. कटाई की तकनीक – पौधों के ऊपरी हिस्से के सूखने के बाद इसके कंदों को कुदाली से खोदकर निकाल लिया जाता है। बड़े कंदों को उपयोग में लेकर छोटे कंदों को तने के साथ लगे रहने देते है एवं इसे वापिस उस स्थान में लगा दिया जाता है।

फूल

फल

कंद

49. *Leea sps.*

1. सामान्य नाम – वज्रगांठ
2. वानस्पतिक नाम – *Leea sp.*
3. कुल – *Vitaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से सितंबर
6. आकारिकी – इसके पौधे काफी छोटे होते है। यह एक बहुवर्षीय परंतु जमीन से लगकर वृध्दि करने वाला पौधा होता है। इसकी ऊँचाई 4 से 10 सेमी. तक हो सकती है। इसकी जड़ें जमीन के ज्यादा अंदर नहीं जाती हैं। जड़ों मे जगह– जगह पर गांठ होती हैं अतः इसे वज्रगांठ कहते है। इसकी पत्तियाँ एवं फूल हथपन के सदृश किन्तु आकार में बहुत छोटी होती है। पत्तियों के लंबाई 6–10 सेमी. तथा चौड़ाई 4–5 सेमी. तक होती है। इसके फूल सफेद रंग के एवं गुच्छे में पाये जाते हैं। गर्मी के मौसम में इसके पौधे ऊपर से सूख जाते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद या जड़
8. वितरण – अमरकंटक, छिन्दवाड़ा
9. उपयोग – इसके कंद का उपयोग गठियावात, हड्डियों का दर्द एवं कमजोरी दूर करने में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी जड़ें उथली होती है अतः इसे आसानी से खोदकर निकाला जा सकता है।

फूल

पत्ती

50. *Mirabilis jalapa* L.

1. सामान्य नाम – गुलबांस लाल (Four o' clock)
2. वानस्पतिक नाम – *Mirabilis jalapa* L.
3. कुल – *Nyctaginaceae*
4. फूलने / फलने का समय – पूरे वर्ष
5. प्रकृति – शाकीय
6. आकारिकी – इसकी ऊंचाई 60 से 90 सेमी. तक होती है। जड़ें कंदिल होती है। पत्तियाँ हलके हरे रंग की तथा रोमरहित होती है, जो कि नीचे से चौड़ी या त्रिकोणीय आकार की होती है। पत्तियाँ लगभग 9 सेमी. लंबी होती है। इसका डण्ठल 4 सेमी. तक लंबा होता है। इसके फूल तीन से सात पुष्प के गुच्छों में निकलते हैं। पत्तियाँ शाखाओं पर विपरीत क्रम में व्यवस्थित होती हैं। फूल गुलाबी लाल रंग के तथा लगभग 6.5 सेमी. लंबे जो कि 5 से 6 पुकेंसरयुक्त होते है। इसके फूल शाम को 4 से 5 के करीब खिलते हैं। इसके जड़ें लंबी, काले रंग की तथा गाजर के आकार की होती है। जडें 1 फुट तक लंबी हो सकती है। इसके बीज छोटे, अण्डाकार, धारीदार एवं काले–भूरे रंग के होते है।
7. उपयोगी भाग – जड़, पत्तियां, फूल एवं बीज
8. वितरण – यह रहवासी क्षेत्रों के आसपास एवं खरपतवार के रूप में पाया जाता है। अमरकंटक मे बहुतायत मिलता है।
9. उपयोग – इसके फूल का उपयोग डाई (लाल) के रूप मे किया जाता है। इसकी जड़ो, पत्तियों एवं बीज का प्रयोग जुलाब ;चनतहंजपअमद्ध के रुप मे किया जाता है। पत्तियों का रस निकालकर घाव पर लगाया जाता है। इसको शोभादार पौधे के रूप में भी उगाया जाता है।
10. कटाई की तकनीक– जडों को कुदाली से गहरा खोदकर निकाल लिया जाता है।

कंद

51. *Mirabilis jalapa* L.

1. सामान्य नाम – गुलबांस सफेद (Four o' clock)
2. वानस्पतिक नाम – *Mirabilis jalapa* L.
3. कुल – *Nyctaginaceae*
4. फूलने / फलने का समय – पूरे वर्ष
5. प्रकृति – शाकीय
6. आकारिकी – इसकी ऊंचाई 60 से 90 सेमी. तक होती है। जड़ें कंदिल होती है। पत्तियाँ हलके हरे रंग की तथा रोमरहित होती है जो कि नीचे से चौड़ी या त्रिकोणीय आकार की तथा लगभग 9 सेमी. तक लंबी होती है। इसका डंठल 4 सेमी. लंबा होता है। इसके फूल तीन से सात पुष्प के गुच्छों में निकलते है। पत्तियाँ विपरीत क्रम में व्यवस्थित होती हैं। इसके फूल सफेद रंग के होते है कभी–कभी इसपर गुलाबी रंग के धब्बे भी दिखाई देते है। फूल लगभग 6 सेमी. लंबे एवं 5 से 6 पुकेंसरयुक्त होते है। इसके फूल शाम को 4 से 5 के करीब खिलते हैं। इसके कंद लंबे, काले भूरे रंग के एवं गाजर के आकार के होते हैं। कंद की लंबाई 1 फुट तक हो सकती है। इसके बीज छोटे, अंडाकार, धारीदार एवं काले रंग के होते हैं।
7. उपयोगी भाग – प्रकंद, पत्तियां, फूल एवं बीज
8. वितरण – यह रहवासी क्षेत्रों के आसपास एवं खरपतवार के रूप में पाया जाता है, परंतु अपेक्षाकृत कम पाया जाता है।
9. उपयोग – इसकी जडें पत्तियाँ एवं बीज का प्रयोग जुलाब ;चनतहंजपअमद्ध के रूप में किया जाता है। पत्तियों का रस निकालकर घाव में लगाया जाता है। इसको शोभादार पौधे के रूप में उगाया जाता है । इसके कंद का उपयोग महिलाओं संबंधी रोगों में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – कंदों को कुदाली से खोदकर निकाल लिया जाता है।

52. *Mirabilis jalapa* L.

1. सामान्य नाम – गुलबांस पीला (Four o' clock)
2. वानस्पतिक नाम – *Mirabilis jalapa* L.
3. कुल – *Nyctaginaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – पूरे वर्ष
6. आकारिकी – इसकी ऊंचाई 60 से 90 सेमी. तक होती है। जड़ें कंदिल होती है। संपूर्ण पौधा ऊपर वर्णित लाल गुलबांस की तरह ही होता है परंतु इसके फूल पीले रंग के होते है। कभी–कभी इसके फूल में लाल रंग का समावेश भी हो जाता है। शाम को 4 से 5 बजे के करीब खिलते हैं। इसके जड़ें लंबी, काले रंग कि तथा गाजर के आकार होती है। इसके बीज छोटे, अंडाकार, धारीदार एवं काले रंग के होते हैं।
7. उपयोगी भाग – प्रकंद, पत्तियां, फूल एवं बीज
8. वितरण – यह रहवासी क्षेत्रों के आसपास एवं खरपतवार के रूप में पाया जाता है।
9. उपयोग – इसकी जड़ें, पत्तियाँ एवं बीज का प्रयोग जुलाब (purgative) के रूप में किया जाता है। पत्तियों का रस निकालकर घाव में लगाया जाता है। इसको शोभादार पौधे के रूप में उगाया जाता है। इसके कंद का उपयोग महिलाओं संबंधी रोगों में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – कंदों को कुदाली से खोदकर निकाल लिया जाता है।

पौधा

53. *Momordica dioica* Roxb. Will.

1. सामान्य नाम – परोडा या ककोरा
2. वानस्पतिक नाम – *Momordica dioica* Roxb. Will.
3. कुल – *Cucurbitaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से सितंबर
6. आकारिकी – यह एक लता होती है। इसकी जड़ें कंदिल होती है। इसका तना पतला एवं कई शाखाओं में विभाजित रहता है। इसकी पत्तियाँ नीचे से चौड़ी एवं ऊपर की तरफ नुकीली होती है एवं पत्तियों के किनारे दांतेदार होते है। पत्तियाँ 3 से 5 उभार वाली होती है। इसके फूल हल्के पीले रंग के होते हैं। फूल छोटे एवं पांच पखुड़ियों वाले होते हैं। इसके कुछ पौधों में केवल फूल आते हैं किन्तु फल नही आते हैं, ऐसे पौधों को क्षेत्रीय भाषा में नर पौधा कहते हैं। इसके फल छोटे हरे गोल अंडाकार होते है जिसकी सतह पर छोटे–छोटे कांटेनुमा बाहर से ढकी हुई होती है।
7. उपयोगी भाग – फल एवं कंद
8. वितरण – साल एवं मिश्रित वनों में पाया जाता है। वनों से लगे गावों मे यह बागड़ पर भी पाया जाता है।
9. उपयोग – यह हमारे देश के सभी भागों में सब्जी के रूप में खाया जाता है। इसका विदेशों में निर्यात भी होता है। इसके कंद का उपयोग पाइल्स एवं मूत्र संबंधी रोगों में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके फलों को जुलाई से सितंबर के दौरान संग्रहित किया जाता है तथा पौधों के सूखने से पूर्व इसके कंदों को कुदाली से खोदकर निकाल लिया जाता है।

कंद

नर फूल

54. *Nervialia prainiana*

1. सामान्य नाम – वन सिंघाड़ा
2. वानस्पतिक नाम – *Nervialia praniana*
3. कुल – *Orchidaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – सितंबर से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह बहुवर्षीय शाकीय पौधा है। इसका ऊपरी भाग अगस्त से उगना प्रारंभ हो जाता है। इसके ऊपरी भाग में केवल एक ही पत्ती आती है जो कि अर्धगोलाकार होती है। पत्तियों पर लंबवत् लहर होती है। इसके एक पौधे में एक ही कंद होता है तथा इस कंद के ऊपर से 2 लंबी लंबी जड़ें एक दूसरे के विपरीत जाती है, यही इसकी विशेषता होती है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – यह जबलपुर के परियट क्षेत्र से संग्रहित किया गया था। बहुत कम जगहों पर नमी वाले स्थान पर मिलता है।
9. उपयोग – इसका कंद पौष्टिक होता है जो कि शक्तिवर्धक के रुप में उपयोग किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके पौधे नमी वाले स्थानों पर ही पाये जाते हैं तथा इसके कंद ज्यादा गहराई में नहीं होते है। अतः इसके कंदों को खुरपी या कुदाली से खोदकर निकाला जाता है।

पत्ती

कंद

55. *Orthosiphon rubicundus* (D. Don) Benth.

1. सामान्य नाम – बड़ी सतावर
2. वानस्पतिक नाम – *Orthosiphon rubicundus* (D. Don) Benth.
3. कुल – *Lamiaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितबंर
6. आकारिकी – यह बहुवर्षीय शाकीय पौधा होता है। यह 25 से 60 सेमी. ऊंचा होता है। इसकी पत्तियों के किनारे धारदार होते है। इसकी जड़ें कंदिल होती है। तने का निचला भाग कड़ा लकड़ीनुमा होता है। फूल के बाह्यदल आपस में जुड़े हुए होते हैं। फूल लाल बैंगनी रंग के होते हैं। फूल का निचला हिस्सा ट्यूब के आकार का होता है। फूल से पुकेंसर बाहर की तरफ निकले हुए होते हैं। इसके कंद सतावर के छोटे कंद की तरह प्रतीत होते है अतः इसे बड़ी सतावर कहते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – यह अमरकंटक, डिण्डोरी, छिन्दवाड़ा के वन क्षेत्रों में मिलता है।
9. उपयोग – पौधे को सुखाकर उसका पाउडर बनाकर उसका उपयोग पीलिया, पथरी, वातरोग आदि में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके संपूर्ण पौधे को नवम्बर–दिसंबर के बाद खोदकर इससे कंद एकत्रित कर लिये जाते हैं।

पौधा

56. *Oxalis corniculata* Linn.

1. सामान्य नाम – अमरूल साग बड़ी, खट्टी बूटी
2. वानस्पतिक नाम – *Oxalis corniculata* Linn.
3. कुल – *Oxalidaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – सितंबर से दिसंबर
6. आकारिकी – यह बहुवर्षीय शाकीय पौधा होता है। इसका तना (डंठल) जमीन के ऊपर सीधे निकलता है। हर तने के शिर्ष पर तीन दलीय पत्तियाँ होती है। प्रत्येक पत्ती में दो उभार होते है। इसका फूल बैंगनी रंग का होता है। इसके फूल 7 से 11 मिमी. चौड़े होते हैं तथा इनमें पांच पखंड़ियां होती है। फल लंबे, चपटे आकार के होते हैं। जिसमें कई बारीक भूरे रंग के बीज होते है। इसका जड़ वाला हिस्सा फूलकर कंदनुमा संरचना बनाता है जो कि जमीन के अंदर विकसित होते रहते हैं।
7. उपयोगी भाग – पत्तियाँ एवं फूल
8. वितरण – नमीदार स्थानों एवं साल के वनों में पाया जाता है।
9. उपयोग – इसकी पत्तियाँ खट्टी होती है जिन्हें सलाद के रूप में कच्चा खाते हैं। इसमें विटामिन C होता है। इसकी पत्तियाँ एवं फूल का उपयोग बुखार, नजला, चोटमूलक घाव, दस्त, कृमि जनित रोग और मूत्र नली के संक्रमण संबंधित रोगों में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी पत्तियां तोड़कर ताजी अथवा सुखाकर उपयोग में ली जाती है। इसके कंद जमीन के अंदर तीन से चार इंच तक रहते हैं जो कि पौधे को खींचने पर नहीं निकल पाते हैं अतः इसे खोदकर निकाला जाता है।

पौधा

कंद

फूल

57. *Pueraria tuberosa* DC.

1. सामान्य नाम – पाताल कुम्हड़ा, विदारी कंद
2. वानस्पतिक नाम – *Pueraria tuberosa* DC.
3. कुल – *Fabaceae*
4. प्रकृति – बेला
5. फूलने / फलने का समय – अप्रैल / फरवरी से अगस्त
6. आकारिकी – यह एक बेला झाड़ी होती है जो कि जमीन के ऊपर ही फैलती जाती है। वृक्षों का आधार मिलने पर इसकी ऊँचाई 3 से 5 मीटर तक हो सकती है। इसकी पत्तियाँ त्रिपत्रक होती है। पत्तियाँ गहरे हरे रंग की होती हैं। फूल एवं फल्लियाँ बहुत कम देखी जाती है। फल्लियाँ 5 से 7.5 सेमी. लंबे रोयेदार होते है। इनमें बीजों की संख्या 2–3 होती है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – अमरकंटक, मण्डला पचमढ़ी, जबलपुर आदि वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
9. उपयोग – इसके कंद का उपयोग बलवर्धक के रूप में किया जाता है। कंद को कुचलकर शरीर पर मलकर गठियावात का उपचार किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके कंद काफी बड़े एवं गहराई में रहते हैं अतः इसे कमर तक गहराई में खोदकर निकाला जाता है।

कंद

58. *Ruellia tuberose* Linn.

1ण सामान्य नाम – तपसकाय

2ण वानस्पतिक नाम – *Ruellia tuberose* Linn.

3ण कुल – *Acanthaceae*

4ण प्रकृति – शाकीय

5ण फूलने / फलने का समय – जुलाई से सितंबर

6ण आकारिकी – यह एक छोटा शाकीय पौधा होता है। इसकी ऊँचाई 1 से 2 फीट होती है। इसकी जड़ें मध्य में फूली एवं दोनों सिरों पर नुकीली होती है। इसकी पत्तियाँ लंबी छोटे पर्णवृंतयुक्त (डण्ठल), दीर्घवृत्तीय नीचे से पतली एवं किनारों पर लहरदार होती है। इसके फूल सुंदर बैंगनी रंग के होते हैं जो नीचे से नलिका (फनल) आकार के होते है। इसके दलपुंज 5 दल (पंखुड़ी) वाले एक दूसरे पर चिपके हुए होते है। इसकी पंखुड़ी 1.6 सेमी. लंबी एवं 1.5 सेमी. चौड़ी होती है। इसके फल बिना डण्ठल के 1.8 से 2.5 सेमी. लंबे केप्सूल आकार के होते है जिसमें 7–8 बीज रहते हैं। इसके सूखे फल पर पानी पड़ने से यह अचानक चटकते है इसलिये इसे क्रैकर प्लांट भी कहते हैं।

7ण उपयोगी भाग – पत्तियाँ और कंद

8ण वितरण – यह जबलपुर, मण्डला, डिण्डौरी आदि के नमी वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।

9ण उपयोग – इसका उपयोग आयुर्वेदिक दवाईयाँ, मूत्रवर्धक औषधि, मधुमेह, ज्वरनाशक, उच्च रक्तचाप में किया जाता है। इसका प्रयोग बिच्छू के काटने पर एवं वृक्क (kidney) में पथरी होने पर किया जाता है।

10ण कटाई की तकनीक – इसके संपूर्ण पौधे को नवम्बर दिसंबर के बाद खोदकर इससे कंद एकत्रित कर लिये जाते हैं।

कंद

59. *Scilla hyacinthine* (Roth) J. F. Macbr.

1. सामान्य नाम – सर्पकांदा
2. वानस्पतिक नाम – *Scilla hyacinthina* (Roth) J. F. Macbr.
3. कुल – *Liliacae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – सितंबर से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय कंदिल पौधा है जिसकी ऊँचाई 10 से 15 सेमी. होती है। इसका कंद प्याज के समान गोल होता है जिसका व्यास 8–10 सेमी. होता है। इसकी पत्तियाँ लंबी एवं गूदेदार होती है एवं इनके अंदरूनी भाग पर बैंगनी रंग के धब्बे होते हैं। इन धब्बों के द्वारा ही इसे पहचाना जाता है। पत्तियों का ऊपरी शिरा यदि मिट्टी के संपर्क में आता है तो उसमें से अस्थानिक जड़ें निकलने लगती हैं। इसके फूल सफेद गुलाबी रंग के असीमाक्षी पुष्पक्रम में व्यवस्थित होते हैं। फल गोलाकार भूरे बैंगनी रंग के होते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – यह मध्य प्रदेश के लगभग सभी वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
9. उपयोग – इसके कंद का उपयोग तिल्ली के सूजन में किया जाता है। इसका उपयोग चर्म रोग एवं हदय संबंधी रोगों में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके संपूर्ण पौधे को नवम्बर दिसंबर के बाद खोदकर इससे कंद एकत्रित कर लिये जाते हैं।

पत्तियाँ एवं फूल

60. *Solena amplexicaulis* (Lam.) Gandhi

1. सामान्य नाम – जंगली कुंदरू
2. वानस्पतिक नाम – *Solena amplexicaulis* (Lam.) Gandhi
3. कुल – *Cucurbitaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय लता होती है परंतु इसका उपरी भाग गर्मियों में सूख जाता है। इसका पत्तियाँ खाने वाले कुंदरू के समान 5–10 से.मी. लंबी एवं त्रिपालित होती है परंतु कुंदरू की तुलना मे ये खुरदुरी होती है। इसके डण्ठल 2–4 सेमी. लंबे होते है। फल कुंदरू के समान ही होते है। सामान्य कुंदरू मे जड़ मोटी गांठ के रुप होती है परंतु इसमे आलू की तरह कंद होते है।
7. वितरण – मण्डला, जबलपुर, कटनी, डिंडोरी, उमरिया, छिन्दवाड़ा मे पाया गया।
8. उपयोगी भाग – पत्तियाँ, फल एवं कंद।
9. उपयोग – मधुमेह रोग के उपचार में सहायक होता है। फल एवं पत्तियाँ ज्वरनाशक की तरह कार्य करते हैं। कंदो को आलू की तरह तरकारी बनाने में उपयोग करते हैं।
10. कटाई की तकनीक – इसके कंदो को गहराई से खोदकर निकाल लेते है। कंदो को साफ करके आलू की तरह उपयोग में लाते है।

पत्ती एवं फल

कंद

61. *Spathogatic puberscene*

1. सामान्य नाम – लाल प्याज
2. वानस्पतिक नाम – *Spathogatic puberscene*
3. कुल – *Orchidaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – मई से जनवरी
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय पौधा होता है जो कि कालीमूसली या खजूर के नये पौधे के समान दिखता है। इसकी पत्तियाँ खजूर अपेक्षा नरम होती है। यह गुच्छे में उगता है। इसमें सफेद रंग के फूल होते हैं जो कि चांदनी के फूलों के समान दिखते है। सफेद फूलों में 5–6 पखुड़ियां होती है तथा बीच में पीले रंग का धब्बा होता है। इसका कंद प्याज के जैसा दिखता है जो कि लाल रंग का होता है। इसलिए इसे लाल प्याज कहते हैं।
7. उपयोगी भाग – पौधा एवं कंद
8. वितरण – यह पचमढ़ी, चित्रकूट आदि वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
9. उपयोग – इसके पौधे शोभादार होते है तथा कंद का उपयोग गठियावात में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके कंदो को खोदकर निकाल लेते है। कंदो को साफ करके छांव में सुखा कर उपयोग में लाते हैं।

पौधा

कंद

62. *Tacca leuntopelaloides* (L.) Kuntze

1. सामान्य नाम – सांपकंद
2. वानस्पतिक नाम – *Tacca leuntopelaloides* (L.) Kuntze
3. कुल – *Taccaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से नवम्बर
6. आकारिकी – यह एक शाकीय सीधा पौधा होता है जिसकी ऊँचाई लगभग 100 से 130 सेमी. तक होती है। इसकी जड़ें बल्ब के आकार की होती है। फूल लंबी डंडियों पर हरे बैंगनी रंग के गुच्छों में निकलते हैं जिसमे से पतले–पतले धागे जैसी संरचनायें निकलती है। फल हरे रंग के होते है जो परिपक्व होने पर लाल हो जाते है। फल अनेकों बीज सहित होते हैं। पत्तियाँ 17 से 150 सेमी. लंबे (petiole) डंठल युक्त होती है जो पौधे के केंद्र से निकलते हैं। पत्तियाँ बड़ी 50 से 60 सेमी. तक लंबी एवं चौड़ी एवं संयुक्त होती है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – मंडला, बैतूल, जबलपुर, बालाघाट।
9. उपयोग – इसके कच्चे कंदों को पेट संबधित बीमारियों में उपयोग किया जाता है। इसकी जड़ों से स्टार्च प्राप्त होता है। इसके कंद को भूनकर खाया भी जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके कंद उथली गहराई में होते है अतः आसानी से निकाले जा सकते है।

पत्ती

कंद

फल

63. *Typhonium trilobatum* Schott

1. सामान्य नाम – घेरकोचू ,
2. वानस्पतिक नाम – *Typhonium trilobatum* Schott.
3. कुल – *Araceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त– सितंबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा होता है। यह लगभग 30–40 सेमी. तक ऊंचा होता है। इसकी पत्तियों के डन्ठल लंबे होते है। इसकी पत्तियाँ 3 उभारों से मिलकर बनी होती हैं। इसका फूल एक पान के पत्ते की तरह एवं गहरे कत्थे रंग का तथा मखमली होता है। इसके आधार से एक लंबा कत्थे रंग का डंठल (spadix) निकलता है जिसमे नर एवं मादा पुष्प होते है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – सामान्यतः यह खेतों के आसपास मिलता है।
9. उपयोग – इसके कंद का उपयोग पाइल्स, अस्थमा, अल्सर और पेट दर्द में होता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके कंद उथले होते है अतः आसानी से खोदकर निकाले जा सकते है।

फूल

64. *Urginea indica* (Roxb) Kunth

1. सामान्य नाम – जंगली प्याज
2. वानस्पतिक नाम – *Urginea indica* (Roxb) Kunth
3. कुल – *Liliaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – मई से अगस्त
6. आकारिकी – यह एक शाकीय पौधा होता है। कंद साधारण प्याज की तरह ही होते है परंतु आकार काफी बड़ा होता है। गर्मियों में ऊपरी भाग सूख जाता है लेकिन प्याज जमीन के अंदर सुसुप्तअवस्था मे पड़ी रहती है। बरसात में पहले फूल निकलते है फिर पत्तियाँ निकलती है। पत्तियाँ चपटी होती है जिनकी लंबाई 11 से 40 सेमी. एवं चौड़ाई 1.50 से 3.00 सेमी. तक होती है। फूल बड़े सफेद रंग के तथा एक ही ड़ंठल पर 5 से 10 तक लगे होते है। फूलों की सफेद पंखुड़ियों के बीच मे हल्की बैगनी रंग की मोटी लाईन होती है। फल गोलाकार होते है। हर फल मे 2 से 6 तक बीज पाये जाते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद (प्याज)
8. वितरण – मध्यप्रदेश में नदी नालों के उथले स्थानों तथा नमी वाले स्थानों मे जाता है।
9. उपयोग – वात रोग, चर्म रोग, कृमीनाशक एवं श्वास रोग में उपयोग किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके कंद (प्याज) के चारों तरफ लगभग 20 सेमी की गोलाई मे लगभग 30 से 40 सेमी गहरा खोदकर निकाल लेते है, कंदो को साफ करके उसमें से मिट्टी एवं बारीक जड़ एवं सूखी पत्तियाँ अलग कर लेते है।

फूल

फल

65. *Vitis latifolia* Roxb.

1. सामान्य नाम – जंगली अंगूर
2. वानस्पतिक नाम – *Vitis latifolia* Roxb.
3. कुल – *Vitaceae*
4. प्रकृति – लता
5. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय कंदिल लता होती है यह अपने आसपास के पौधों के सहारे ऊपर की तरफ फैलती है। इसका तना कडा एवं अंदर से खोखला होता है। इसकी नई शाखाएं मुलायम एवं चिकनी होती हैं। पत्तियॉ सरल 3–7 इंच चौड़ी एवं 4–8 इंच लंबी होती है। इसकी पतली पत्तियां दिल के आकार की एवं पांच कोणीय (5 Lobed) वाली होती है एवं पत्ति के किनारे हलके दांतेदार होते हैं। पत्तियों के आधार से पांच शिराएं निकलती हैं। पत्तियां 2–4 इंच लंबे पर्णवृंत युक्त होती है। फूल लाल लाल–भूरे रंग के होते है एवं गुच्छों में लगे होते है। इसके फूल में पांच बाह्यदल, पांच दल एवं पांच पुंकेसर होते हैं। फल काले रंग के अंगूर के समान होते है। प्रत्येक फल में एक या दो बीज होते हैं।

6. फूलने / फलन का समय – जुलाई से सितंबर
7. वितरण – मध्यप्रदेश में नदी नालों के उथले स्थानों तथा नमी वाले स्थानों में जाता है।
8. उपयोगी भाग – पत्तियां, फल एवं कंदील जड़
9. उपयोग – इसकी पत्तियों का रस दांत की बीमारियों में प्रयोग होता है। कंद का उपयोग ल्यूकोरिया और शरीर दर्द में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके कंदों को गहरा खोदकर निकालकर बाजू के कंदों को तोड़ लेते हैं। तथा मुख्य कंद को वापस उसी जगह लगा देते है।

कंद

फूल

फल

66. *Xanthosoma saggitifollium* (L.) Schott

1. सामान्य नाम – काली घुईंयां या ब्रम्हरकास
2. वानस्पतिक नाम – *Xanthosoma saggitifollium*(L.) Schott
3. कुल – *Araceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. आकारिकी – यह एक बहुवार्षिक शाकीय पौधा होता है जिसका ऊपरी भाग सूख जाता है। इसकी ऊँचाई 3 से 5 तक फीट होती है। पानी वाले व नमी वाले स्थानों पर यह बहुवार्षिक पौधे की तरह व्यवहार करता है। इसमें कंद बनते है। कंद से पत्तियों का विकास होता है। पत्तियें के डंठल गहरे बैंगनी रंग के होते है तथा पत्तियॉ ऊपर से हरे एवं नीचे से बैगनी रंग की होती है एवं आधारीय भाग पर यह हल्की हरी होती है। पुष्पक्रम स्पेडिक्स (Spadix) के रूप में एवं हल्के हरे रंग का होता है। पत्तियों का आकार स्थान के अनुरुप बदलता रहता है।

6. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितबंर
7. वितरण – जबलपुर, बालाघाट आदि क्षेत्रों में।
8. उपयोगी भाग – पत्तियाँ, कंद
9. उपयोग – इसकी कंद और पत्तियों का उपयोग भोजन के रूप में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – सामान्यतः इसकी पत्तियों का उपयोग भोजन के रूप में किया जाता है। अतः बड़ी पत्तियों को तेज चाकू से काट लिया जाता है तथा छोटी पत्तियों को बढ़ने के लिये छोड़ दिया जाता है। तीन से चार वर्ष पुराने पौधों से कंद भी खोदकर निकाल लिये जाते है।

67. *Zephyranthes citrine*

1. सामान्य नाम – पिली लीली
2. वानस्पतिक नाम – *Zephyranthes citrine*
3. कुल – *Amaryllidoideae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक मौसमी शाकीय पौधा होता है। इसका पौधा लगभग 30 सें.मी. तक ऊंचा होता है। पत्तियाँ 14 से 25 से.मी. तक लंबी एवं 4 से 6 मी.मी. चौड़ी तथा चिकनी होती है। इसके फूल फनल की तरह एवं चटक पीले रंग के होते हैं। इसका कंद छोटी प्याज की तरह परंतु बाहर से काले रंग का होता है। इसमें काफी मात्रा में भोज्य पदार्थ संचित रहता है। बीज छोटे एवं काले रंग के होते है। सामान्य अवस्था मे बीज अंकुरित नहीं होता है अतः इसके कंद के छोटे–छोटे ही टुकड़े जमीन में गाड़ दिए जाते है, जिससे नये पौधे निकलते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – भारत में बंगाल, बिहार, चैन्नई, मध्यप्रदेश, पंजाब एवं उत्तरप्रदेश में खेतों के आसपास अधिक होता है।
9. उपयोग – शोभादार पौधे के रुप मे लगाया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – उपरी हिस्सा सूखने पर कंद को 8 से 12 इंच गहरी खुदाई कर निकाला जा सकता है।

कंद

68. *Zingiber capitatum* Roxb.

1. सामान्य नाम – जंगली अदरक
2. वानस्पतिक नाम – *Zingiber capitatum* Roxb. i
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय कंदयुक्त पौधा होता है जिसका कंद अदरख की तरह होता है। यह 1.5 मी. तक ऊंचा पौधा होता है। पत्तियां लंबी पतली एवं तने पर एकांतर क्रम में व्यवस्थित होती है। फूल लाल रंग के मुख्य तने के ऊपरी भाग में 8 से 10 सेमी. लंबे पाइन के कोन के समान संरचना केप्सूल के रुप मे गुच्छे में व्यवस्थित होते है। इसके फल लाल रंग के कैप्सूल आकार के होते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – यह जबलपुर, बालाघाट, मण्डला, डिन्डोरी आदि क्षेत्रों में होता है एवं बहुत कम मिलता है।
9. उपयोग – कंद का उपयोग दमा, खांसी, गठियावात चर्मरोग आदि में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – गर्मियों मे पौधों के सूखने पर कंद को खोदकर निकाल लिया जाता है। कंद को खोदकर लगभग एक तिहाई हिस्सा वापस उसी स्थान पर लगा देना चाहिये।

69. *Zingiber mioga* Thunb.

1. सामान्य नाम – जंगली अदरक
2. वानस्पतिक नाम – *Zingiber mioga* Thunb.
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा है। इसका कंद एक भूमिगत रूपांतर तना है जोकी मिट्टी के अंदर क्षैतिज दिशा मे बढ़ता जाता है। इसमें काफी मात्रा में भोज्य पदार्थ एवं रेशे रहते हैं जिसके कारण फूलकर मोटा हो जाता है। इसका पौधा 100 से 130 सेमी. तक ऊंचा होता है। पत्तियां 10 से 35 सेमी. तक लंबी एवं 2 से 5 सेमी. तक चौड़ी होती है। इसके फूल लाल रंग के होते हैं जो कि सीधे कंद से निकलते है। सामान्यतः अदरक में बीज का निर्माण नहीं होता है परंतु पुराने पौधों में छोटे–छोटे काले बीज होते हैं। इन बीजों से प्राकृतिक अवस्था में पौधे तैयार होते है। बीज से तैयार पौधे में कंद 2–3 वर्ष बाद ही विकसित अवस्था में आते है। अतः इसके विकसित कंद के ही छोटे–छोटे टुकड़े जमीन में गाड़ दिए जाते है एवं पौधे तैयार किए जाते हैं।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – जबलपुर, बालाघाट, मण्डला, डिन्डोरी, पचमढ़ी आदि क्षेत्रों में होता है।
9. उपयोग – कंद का उपयोग दमा, खांसी, गठियावात चर्मरोग आदि मे किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – गर्मियों मे पौधों के सूखने पर कंद को खोदकर निकाल लिया जाता है। कंद को खोदकर लगभग एक तिहाई हिस्सा वापस उसी स्थान पर लगा देना चाहिये।

70. *Zingiber roseum*

1. सामान्य नाम – जंगली अदरक
2. वानस्पतिक नाम – *Zingiber roseum*
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा है। इसका कंद एक भूमिगत रूपांतरीत तना होता है है। यह मिट्टी के अंदर क्षैतिज रूप में बढ़ता है। इसमें काफी मात्रा में भोज्य पदार्थ संचित रहता है जिसके कारण फूलकर मोटा हो जाता है। इसका पौधा लगभग 1 मी. से 1.5 मी. तक ऊंचा होता है। पत्तियां 10 से 25 सेमी. तक लंबी एवं 2 से 5 सेमी. चौड़ी होती है। पत्तीयुक्त तने के बगल से जमीन के नीचे से नया वृन्त निकलता है। इसपर फूल एक लंबे डण्ठल पर पाइन के कोन के समान संरचना केप्सूल के रुप में लगे होते है। केप्सूल की लंबाई 10 से 15 सेमी. तक होती है। प्रत्येक केप्सूल में 40 से 50 तक फूल निकल सकते है। फूलों के परिपक्व होने पर छोटे–छोटे काले रंग के बीजों का निर्माण होता है। सामान्यतः अदरक के बीज से नये पौधे तैयार नहीं होते हैं। इसके कंद से ही पौधे निकलते हैं परंतु सही वातावरण मिलने पर बीज से भी छोटे–छोटे पौधे निकलते हैं जिनके कंद तीन से चार वर्ष में परिपक्व हो पाते है।
7. उपयोगी भाग – कंद एवं पत्तियॉ
8. वितरण – मध्यप्रदेश के पचमढी, अमरकंटक, बालाघाट, मण्डला, होशंगाबाद आदि वन क्षेत्रों में होता है।
9. उपयोग – कंद का उपयोग दमा, खांसी, गठियावात, चर्मरोग आदि मे किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – गर्मियों में पौधों के सूखने पर कंद को खोदकर निकाल लिया जाता है। कंद को खोदकर लगभग एक तिहाई हिस्सा वापस उसी स्थान पर लगा देना चाहिये।

फूल

71. *Zingiber spp.*

1ण सामान्य नाम – जंगली अदरक

2ण वानस्पतिक नाम – *Zingiber spp.*

3ण कुल – *Zingiberaceae*

4ण प्रकृति – शाकीय

5ण फूलने / फलने का समय – अगस्त से अक्टूबर

6ण आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा है जिसकी जड़ें अदरक कंद के समान होती हैं। जमीन से ऊपर का पत्तीयुक्त तने का भाग लगभग 100 से 150 सेमी. तक ऊंचा होता है। इसकी पत्तियाँ लंबी एवं तने पर अभिमुख क्रम में लगी रहती हैं। पत्तीयुक्त तने के बगल से जमीन के नीचे से नया वृन्त निकलता है। जिसमें पाइन के कोन के समान संरचना निकलती है जो कि एक दो हते में गहरे लाल रंग से बदल जाता है और इसमें छोटे सफेद क्रीम रंग के फूल निकलते हैं।

7ण उपयोगी भाग – हरी पत्तियाँ एवं कंद

8ण वितरण – मध्यप्रदेश के पचमढ़ी, अमरकंटक, बालाघाट, मण्डला, होशंगाबाद आदि वन क्षेत्रों में होता है।

9ण उपयोग – इसका उपयोग पेट दर्द, घाव, अपच, दांत दर्द आदि के उपचार में किया जाता है।

10ण कटाई की तकनीक – गर्मियों में पौधों के सूखने पर कंद को खोदकर निकाल लिया जाता है। कंद को खोदकर लगभग एक तिहाई हिस्सा वापस उसी स्थान पर लगा देना चाहिये।

पत्ती

फूल

कुछ कंद प्रजातियाँ जो कि मध्यप्रदेश के वनों में नही पायी जाती है परंतु व्यापारिक एवं औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के कारण उनका उपयोग खेती, रोपणी एवं घरों में भी किया जाता है। ऐसी कुछ कंद प्रजातियों का वर्णन निम्नानुसार है।

तालिका क्रमांक 2:

संस्थान मे परियोजना अन्तर्गत संग्रहित मध्यप्रदेश के वनों मे नही पायी जाने वाली कंद प्रजातियॉ।

क्रमांक	वैज्ञानिक नाम	सामान्य नाम	कुल
1.	*Alpinia calcarata* Rosc.	कुलंजन भेद	*Zingiberaceae*
2.	*Alpinia galanga* Willd.	कुलंजन	*Zingiberaceae*
3.	*Asparagus officinalis* Linn.	शतावर	*Liliaceae*
4.	*Asparagus plumosus* Baker	शतावर बेला शोभादार	*Liliaceae*
5.	*Asparagus densiflorus* (Kuth) Jessop	सियार पुछ सतावर	*Liliaceae*
6.	*Costus Erythrophyllus* Loes.	लाल केवकंद	*Costaceae*
7.	*Costus pictus* D. Don	पीला केवकंद	*Costaceae*
8.	*Kaempferia rotunda* Linn.	चंद्रमूल	*Zingiberaceae*
9.	*Maranta arundinacea* Linn.	आरारोट	*Marantaceae*
10.	*Oxalis triangularis* Linn.	शोभादार अमरूल साग	*Oxalidaceae*

1. *Alpinia calcarata* Rosc

1. सामान्य नाम – कुलंजन भेद
2. वानस्पतिक नाम – *Alpinia calcarata* Rosc
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अप्रैल से जून
6. आकारिकी – यह एक बहुवार्षिक शाकीय पौधा होता है। इसमें जमीन की सतह से नीचे प्रकंद का फैलाव होता रहता है। इसकी पत्तियाँ अदरक के समान एवं हल्के हरे रंग की होती है। पत्तियों की लंबाई 30–40 से.मी. एंव चौड़ाई 2–3 से.मी. तक होती है। फूल लंबे खुशबुदार तथा लाल सफेद रंग के होते है। फल कैप्सूल के समान एवं लाल रंग का होता है। सामान्यतः मध्य प्रदेश मे इसमें फूल तो आते है परंतु फल नहीं लगते है।
7. वितरण – यह मध्य प्रदेश मे प्राकृतिक रुप में नहीं पाया जाता है परंतु रोपणियों मे शोभादार पौधे के रुप में भी लगाया जाता है।
8. उपयोगी भाग – प्रकंद
9. उपयोग – इसका उपयोग मधुमेह, गठियावात एवं मोटापे के उपचार में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके प्रकंदो को खोदकर निकाल लेते है, कंदो को साफ करके उसमें से मिट्टी एवं बारीक जड़ अलग कर लेते है।

2. *Alpinia galanga* Willd.

1. सामान्य नाम – कुलंजन , सुगंधमूल
2. वानस्पतिक नाम – Alpinia galanga Willd.
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अप्रैल से मई
6. आकारिकी – यह एक बहुवार्षिक शाकीय पौधा होता है। इसकी उँचाई 1 से 2 मी. तक होती है। इसके प्रकंद गोल, लंबे अनियमित आकार के रेशेदार एवं सुगंधित होते है। पत्तियाँ गहरे हरे रंग की तथा भालाकार होती है। पत्तियों की उपरी सतह चिकनी तथा अधिक चमकदार होती है। पत्तियॉ 8 से 10 से.मी. तक चौडी होती है। फूल सफेद रंग के तथा असीमाक्षी पुष्पक्रम में रहते है। इसके फल गोल एवं लाल रंग के होते हैं।
7. वितरण – यह भी मध्य प्रदेश मे प्राकृतिक रुप में नही पाया जाता है परंतु रोपणियों मे शोभादार एवं औषधीय पौधे के रुप मे लगाया जाता है। व्यापारिक महत्व होने के कारण इसकी खेती भी की जाती है।
8. उपयोगी भाग – प्रकंद, फल
9. उपयोग – इसका उपयोग मधुमेह एवं दमा के उपचार में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसके प्रकंदो को खोदकर निकाल लेते है। कंदो को साफ करके उसमें से मिट्टी एवं बारीक जड़ अलग कर लेते है।

पौधा

प्रकंद

3. *Asparagus officinalis* Linn.

1. सामान्य नाम – शतावर (Asparagus)
2. वानस्पतिक नाम – *Asparagus officinalis* Linn.
3. कुल – *Asparagaceae*
4. प्रकृति – झाड़ी
5. फूलने / फलने का समय – मई से जून
6. आकारिकी – इसका तना 3 से 4 फीट ऊंचा, सीधा एवं बहुशाकीय होता है। इसकी शाखाएं पतली एवं नीचे की ओर झुकी होती है। शाखाओं के किनारों से सुई के समान बारीक–बारीक हरे रंग की पत्तियाँ जो कि 2.5 सेमी. लंबी होती है। पत्तियाँ एकान्तर क्रम में लगी होती है। इसके फूल कभी–कभी दिखते हैं। इसमें एक शाखा में एक या दो फूल एक साथ लगते हैं जो हरे सफेद रंग के होते हैं। 6 पुकेंसर तथा नारंगी रंग के स्त्रीकेसर युक्त होता है। इसके फल छोटे गोलाकार हरे रंग के होते हैं, जो पकने पर नारंगी रंग के हो जाते है।
7. उपयोगी भाग – नया कोमल तना
8. उपयोग – इसके तने का कोमल भाग सलाद एवं सब्जी के रुप में खाया जाता है।
9. वितरण – मध्य प्रदेश के वनों मे नही पाया जाता है। रोपणियों मे एवं खेतों मे लगाया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – तना :–शतावर के कंद जब अंकुरित होकर नए प्ररोह जमीन से बाहर आते हैं तो एक सीधे डंठल के रूप में दिखते हैं प्ररोह के इसी उपरी भाग को खाने में प्रयोग किया जाता है। अतः इनके उपर से 6 सेमी. लंबे मुलायम टुकड़े को काट लिया जाता है। जिसका प्रयोग खाने में होता है।

4. *Asparagus plumosus* Baker

1. सामान्य नाम – शतावर Asparagus Fern
2. वानस्पतिक नाम – *Asparagus plumosus* (Beaker)
3. कुल – *Asparagaceae*
4. प्रकृति – लता
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से दिसंबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय झाड़ीनुमा लता होती है जो लगभग 5 मी. या इससे अधिक बड़ी होती है। इसका तना कठोर होता है जिसमें से छोटी–छोटी शाखाएं जमीन की सतह के सामानान्तर निकलती है। इसका तना हरे से लाल भूरे रंग का होता है जो कांटे एवं रोयेविहीन होता है। इसकी शाखाएं सुई के नोक के समान पतली पत्तियों युक्त होती हैं। पत्तियाँ गुच्छों में निकलती है जोकि फर्न की तरह दिखती है। इसके फूल छोटे सफेद या हरे सफेद रंग के घंटी के आकार के एक या जोड़े में शाखाओं पर पूरी लंबाई में निकलते है। इसके फल छोटे गोल हरे रंग के 4–5 मिमी. के होते हैं। जो परिपक्व होने पर लाल रंग के हो जाते है।
7. उपयोगी भाग – जड़, तना एवं पत्तियाँ
8. वितरण – मध्य प्रदेश के वनों मे नही पाया जाता है। रोपणियों मे एवं घरों मे शोभादार पौधे के रुप मे लगाया जाता है।
9. उपयोग – इसके जड (कंद) को दूध और मिश्री के साथ उबालकर पेचिश एवं दस्त में प्रयोग किया जाता है। इसके तने एवं पत्तियों का प्रयोग मलेरिया में होता है। पत्तियों को सजावट के लिये भी उपयोग मे लाया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – सामान्यतः बड़ी लता की पत्तियों को काटकर उपयोग मे लिया जाता है।

5. *Asparagus densiflorus* (Kuth) Jessop

1. सामान्य नाम – सयार पुंछ शतावर foxtail fern
2. वानस्पतिक नाम – *Asparagus densiflorus* (Kuth) Jessop
3. कुल – *Asparagaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – नवंबर से जनवरी
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय कांटेदार कंदिल पौधा होता है। इसके कंद छोटे एवं सफेद रंग के होते है। इनकी लंबाई 2–3 सेमी. होती है। इसका तना चिकना, हरे भूरे रंग का 1 मी. तक लंबा हो सकता है जिस पर कहीं–कहीं 5 मिमी. के छोटे–छोटे कांटे होते हैं। इसकी पत्तियाँ छोटी, पतली सुई के समान तने पर गुच्छे में लगी रहती है। इसके फूल तने के अग्र भाग अधिकतर सफेद रंग के कभी–कभी पीले गुलाबी रंग के गुच्छे में घंटी के आकार के लगे रहते हैं। फूल में 3 बाहय दल एवं 3 दल होते है। इसमें फूल साल में एक बार आते हैं तथा इसके फल छोटे गोल एवं 5 मिमी. व्यास के तथा लाल रंग के होते हैं। हर फल के अंदर एक काले रंग का गोल बीज होता है।
7. उपयोगी भाग – इसकी जड़ें एवं संपूर्ण पौधा
8. वितरण – मध्य प्रदेश के वनों मे नही पाया जाता है। रोपणियों मे एवं घरों मे लगाया जाता है।
9. उपयोग – कंद का उपयोग शक्तिवर्धक के रुप में किया जाता है। पौधे का उपयोग सजावट के लिये किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – जब इसके पौधे परिपक्व हो जाए तब इसके कंदों की खुदाई करनी चाहिए। जड़ों को तोडकर उन्हें दो तीन बार पानी से अच्छी तरह साफ कर लेते है। इसे कच्चा भी खाया जा सकता है या इसके कंदो को किसी साफ चादर पर 10–15 दिनों तक धूप में अच्छी तरह सुखा लेते है। पूर्ण रूप से सूखे कंदों को एकत्रित कर रख लेते है।

6. *Costus erythrophyllus* Loes.

1. सामान्य नाम – लाल केवकंद
2. वनस्पतिक नाम – *Costus Erythrophyllus* Loes.
3. कुल – *Costaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – इसमें अगस्त से सितंबर तक फूल आते हैं परंतु मध्यप्रदेश की जलवायु में फल एवं बीज का निर्माण नहीं हो पाता है।
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय पौधा होता है जिसकी उंचाई 1–2 फीट तक होती है। इसकी पत्तियाँ अपेक्षाकृत चौडी एवं निचे की तरफ लाल रंग की एवं ऊपर की तरफ हरे रंग की होती है। पत्तियाँ सरल, अंडाकार, 6 से 10 इंच तक लंबी होती है। इसकी पत्तियाँ वर्षभर हरी रहती हैं। पत्तियां तने पर सर्पिलाकार (गोलाई) में लगी होती हैं। तनों के शिरों पर कोन के आकार की आकृति होती है जिस पर गुलाबी–सफेद रंग के फूल लगते है।
7. उपयोगी भाग – पत्तियाँ एवं कंद
8. वितरण – यह मध्य प्रदेश का पौधा नहीं है परंतु इसे अधिकतर रोपणियों में शोभादार पौधे के रुप मे तैयार किया जाता है।
9. उपयोग – इसकी सूखी पत्तियों का पाउडर बनाकर या ताजी पत्तियों का गठियावात में प्रयोग किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी पत्तियों को काटकर सुखाकर रख लेते है।

फूल

7. *Costus pictus* D. Don

1. सामान्य नाम – पीला केवकंद, इन्सुलिन प्लांट
2. वनस्पतिक नाम – *Costus pictus* D. Don
3. कुल – *Costaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलन – इसमें अगस्त से सितंबर तक फूल आते हैं परंतु मध्यप्रदेश की जलवायु में फल एवं बीज का निर्माण नहीं हो पाता है।
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय पौधा होता है। इसकी उंचाई 2 से 3 फीट तक होती है। इसकी पत्तियाँ हल्के हरे रंग की सरल, संपूर्ण चिकनी, अंडाकार एवं 4 से 8 इंच लंबी होती है। इसकी पत्तियाँ वर्षभर हरी रहती हैं। पत्तियों के नीचे का भाग हल्के रंग का होता है। पत्तियां तने पर सर्पिलाकार (गोलाई) में लगी होती हैं। गर्म मौसम में तनों के शिरों पर कोन के आकार की आकृति होती है जिस पर 1.5 इंच व्यास का पीले रंग का फूल लगता है जिसमें अंदर की तरफ लाल रंग की लाइनें बनी होती है।
7. उपयोगी भाग – पत्तियाँ एवं कंद
8. वितरण – यह मध्य प्रदेश का पौधा नहीं है परंतु इन्सुलिन पौधे के रूप में इसे अधिकतर रोपणियों में तैयार किया जाता है।
9. उपयोग – इसकी सूखी पत्तियों का पाउडर बनाकर या ताजी पत्तियों का मधुमेह में प्रयोग किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी पत्तियों को काटकर सुखाकर रख लेते है।

8. *Kaempferia rotunda*

1. सामान्य नाम – चंद्रमूल, भूमिचंपा
2. वानस्पतिक नाम – *Kaempferia rotunda*
3. कुल – *Zingiberaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – अगस्त से सितंबर
6. आकारिकी – इसके फूल बैंगनी रंग के होते हैं। इसका कंद छोटा, कड़ा एवं असमान आकार का होता है। इसके कंद से 2–3 फूल का गुच्छा एक साथ निकलता है। फूल 2–3 दिन में सूख जाते हैं किन्तु कंद से लगातार 4–5 हते तक नये पुष्प निकलते रहते हैं। इसमें पत्तियों से पहले फूल का गुच्छा दिखाई देता है। इसके पौधे में फूल एवं पत्तियाँ लंबे समय तक एक साथ नहीं होती हैं क्योंकि फूल निकलकर जल्दी सूख जाते है उसके पश्चात् सफेद रंग की पत्तियाँ कंद से निकलती हैं। कई बार इसकी पत्तियों की उपरी सतह हरे रंग की जिस पर सिल्वर रंग की आकृति बनी होती है।
7. उपयोगी भाग – फूल एवं कंद
8. वितरण – प्राकृतिक रूप से जंगलों में नही होता है किन्तु रोपणियों मे एवं घरों मे लगाया जाता है।
9. उपयोग – इसके फूल से मलहम बनता है जो खाज–खुजली के उपचार में प्रयोग किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – फूलों को सूखने से पहले तोड़कर छांव मे सुखा लेते है। पत्तियाँ सूखकर गिरने लगे तो इस समय इसकी कंदों की खुदाई करनी चाहिए। कंदो को खोदकर उन्हें दो तीन बार पानी से अच्छी तरह साफ कर लेते है। इसके बाद इन कंदो को किसी साफ चादर या पॉलीथिन सीट पर 10–15 दिनों तक धूप में अच्छी तरह सुखा लेते है।

कंद

9. *Maranta arundinacea*

1. सामान्य नाम – आरारोट
2. वानस्पतिक नाम – *Maranta arundinacea*
3. कुल – *Marantaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – जुलाई से सितंबर
6. आकारिकी – यह एक बहुवर्षीय शाकीय पौधा होता है जो हल्दि के समान दिखता है। इसकी जड़ें जमीन के नीचे फैलती है। इसके जड़ें कंद के रूप में होती है जिससे स्टार्च प्राप्त किया जाता है। इसकी ऊँचाई 1.5 मी. तक होती है। इसके तने से बहुत सी शाकाएं निकलती है जिनमें लंबी फैली हुई बहुत सारी नुकीली पत्तियाँ निकलती है। इसके फूल छोटे वृन्तयुक्त सफेद रंग के होते है।
7. उपयोगी भाग – कंद
8. वितरण – प्राकृतिक रूप से जंगलों में नही होता है किन्तु रोपणियों मे एवं घरों मे लगाया जाता है।
9. उपयोग – पौधे के प्रकंद से स्टार्च (आरारोट) प्राप्त किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी पत्तियाँ जब सूख जाती है। उस समय इसके कंद में स्टार्च की मात्रा अधिक हो जाती है। इस समय इन्हें जमीन से निकालकर साफ करके छीलकर पानी में किस लेते हैं। उसके पश्चात इस घोल को सुखाकर पाउडर के रूप में इकट्ठा कर लिया जाता है। इस पाउडर को कई बार धुलाई करके साफ किया जाता है।

कंद

10. *Oxalis triangularis* Linn.

कंद

1. सामान्य नाम – शोभादार अमरूल साग बड़ी खट्टी बूटी
2. वानस्पतिक नाम – *Oxalis triangularis* Linn.
3. कुल – *Oxalidaceae*
4. प्रकृति – शाकीय
5. फूलने / फलने का समय – सितंबर से दिसंबर
6. आकारिकी – यह बहुवर्षीय शाकीय पौधा है जिसका तना जमीन के ऊपर फैलता है एवं जमीन की सतह के नीचे गहराई में कंद रहता है। कंद से लगी हुई कंदील जड़ें निकलती हैं। पत्तियाँ बैगनी रंग की एवं तीन दलीय होती है। प्रत्येक पत्ती में दो उभार होते है एवं तीन पत्तियाँ तने पर एक ही डण्ठल में लगी रहती हैं। इसका फूल हलका बैंगनी रंग का होता है। इसके फूल 7–11 मिमी. चौड़े होते हैं इनमें पांच पखंड़ियां होती है। फल लंबे, चपटे आकार के होते हैं। जिसमें कई बारीक भूरे रंग के बीज होते है। इसका जड़ वाला हिस्सा फूलकर कंदनुमा संरचना बनाता है जो कि जमीन के अंदर विकसित होते रहते हैं।
7. उपयोगी भाग – पत्तियाँ एवं फूल
8. वितरण – नमीदार स्थानों एवं साल के वनों में पाया जाता है।
9. उपयोग – इसकी पत्तियाँ खट्टी होती है जिन्हें सलाद के रूप में कच्चा खाते हैं एवं इसमें विटामिन C होता है। इसकी पत्तियाँ एवं फूल का उपयोग बुखार, नजला, चोटमूलक घाव, दस्त, कृमि जनित रोग और मूत्र नली संक्रमण संबंधित रोगों में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – इसकी पत्तियां तोड़कर ताजी अथवा सुखाकर उपयोग में ली जाती है। इसके कंद जमीन के अंदर तीन से चार इंच तक रहते हैं जो कि पौधे को खींचने पर नहीं निकल पाते हैं अतः इसे खोदकर निकाला जाता है।

बांस

हमारे वनों मे पाये जाने वाले बांस भी प्रकंदयुक्त होते है। मध्यप्रदेश में मुख्यतः कटंग एवं देशी बांस पाये जाते है। इनका व्यापारिक एवं औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के कारण इनका उपयोग खेती, रोपणी एवं घरों में भी किया जाता है। कटंग एवं देशी बांस का संक्षिप्त वर्णन निम्नानुसार है।

1. *Bambusa arundinacea Willd*

1. सामान्य नाम – कंटग बांस
2. वानस्पतिक नाम – *Bambusa arundinacea Willd*
3. कुल – *Poaceae*
4. प्रकृति – झाड़ी
5. फूलने / फलने का समय – इसमें 30–32 वर्ष के अंतराल पर फूल आते हैं।
6. आकारिकी – यह बांस की झुरमुट वाली प्रजाति है। इस प्रजाति की ऊंचाई मध्य प्रदेश के अन्य बांस की प्रजातियों की तुलना में ज्यादा होती है। इसकी पर्वसंधियों से कई शाखाएं निकलती है। इनमें से एक दो शाखा अन्य शाखाओं की तुलना में काफी लंबी लंबी होती है। इसकी पत्तियाँ लगभग 8 इंच लंबी एवं 1 इंच चौड़ी, पतली, भालाकार होती है जो कि 1 इंच लंबे पर्णवृंत युक्त होती हैं। पत्तियों की उपरी सतह चिकनी एवं नीचे की सतह रोयेदार होती है एवं इनका आधार गोलाकार एवं उपरी भाग नुकीला और सीधा होता है।
7. उपयोगी भाग – परिपक्व तना एवं करील
8. वितरण – बालाघाट एवं मण्डला
9. उपयोग – इसके तने का उपयोग घर के निमार्ण में एवं करील का प्रयोग आचार एवं सब्जी के रूप में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – बारिश के दौरान इसके नये निकलने वाले तने को करील कहते है। यह करील 2 से 3 फूट का होने पर काट लेते है तथा आचार एवं सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता है। पके बांस को काटकर व्यापारिक एवं व्यक्तिगत रुप से उपयोग मे लाया जाता है।

2. *Dandrocalamus Strictus* (Roxb). Nees

1. सामान्य नाम – देशी बांस
2. वानस्पतिक नाम – *Dandrocalamus Strictus* (Roxb). Nees
3. कुल – *Poaceae*
4. प्रकृति – झाड़ीनुमा
5. फूलने / फलने का समय – इसमें 30–40 वर्ष के अंतराल पर फूल आते हैं।
6. आकारिकी – यह बांस सघन, झुरमुटदार पर्णपाती घास की प्रजाति है जिसका तना अंदर से ठोस होता है। यह तना 2.5–8 सेमी. गोलाई का तथा 8–16 मी ऊंचाई का होता है। यह प्रारंभ में हल्के पीले हरे रंग का होता हैं जो परिपक्व होने पर मटमैले हरे रंग का हो जाता है। इसकी पत्तियाँ लंबी भालाकार नीचे से गोल एवं छोटे पर्णवृंत युक्त होती है जिनकी लंबाई 25 सेमी. एवं चौड़ाई 3 सेमी. तक होती है। पत्तियों का ऊपरी भाग नुकीला एवं मुड़ा हुआ होता है। इसका पुष्पक्रम एक बड़े पुष्पगुच्छ की तरह होता है जिसमें 4–5 सेमी. की दूरी पर गोल, घने पुष्पगुच्छ लगे होते हैं।
7. उपयोगी भाग – करील, तना एवं पत्तियाँ
8. वितरण – जबलपुर, मण्डला, बालाघाट, सिवनी, छिन्दवाड़ा
9. उपयोग – इसके तने का उपयोग बांस की टोकरियां सजावटी सामान एवं फर्नीचर आदि बनाने में होता है। कंद का प्रयोग आचार एवं सब्जी के रूप में किया जाता है।
10. कटाई की तकनीक – बारीश के दौरान इसके नये निकलने वाले तने को करील कहते है। यह करील 2 से 3 फूट ऊंचा होने पर काट लेते है तथा आचार एवं सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता है। पके बांस को काटकर व्यापारिक एवं घरेलु उपयोग मे लाया जाता है।

शब्द संग्रह

झाड़ी (Shrub) : ऐसे पौधे जो आकार में बड़े होते हैं जिनकी उंचाई 2–3 मी. तक होती है तथा तने सख्त तथा काष्ठीय होते हैं किन्तु इनमें स्पष्ट तना नहीं पाया जाता है, झाड़ी कहलाते हैं।

शाकीय (Herb) : ऐसे पौधे जो आकार मे छोटे होते हैं तथा उनका तना हरा स्तंभ वाला, कोमल तथा मुलायम होता है अर्थात कड़ा या काष्ठीय नहीं होता है, शाक कहलाता है।

एकवर्षीय, द्विवर्षीय : जब कोई पौधा अपना जीवन चक्र एक मौसम में पूर्ण कर लेता है एवं बहुवर्षीय पौधा उसे एक वर्षीय कहते हैं तथा जब किसी पौधे को फूलने फलने एवं अपना जीवन चक्र पूर्ण करने में दो वर्ष लगते है उसे द्विवर्षीय कहते हैं, वह पौधे जो तीन या उससे अधिक वर्ष तक रहते हैं उन्हें बहुवर्षीय पौधे कहते हैं।

घनकंद (Corm) : जमीन के अंदर तना जब अर्ध गोल आकार का मांसल एवं पोषणयुक्त होता है और उसके ऊपरी हिस्से से पौधे का तना एवं फूल निकलते हैं घनकंद के नीचे के भाग से जड़ें निकलती है। इसे घनकंद कहते हैं यह ग्लैडूलस के बल्ब के समान होता है।

प्रकंद (Rhizome) : जब तना भूमिगत फैलता है और इसके पर्वसंधि से जड़ें, कलिकाएं या पत्तियां आदि निकलती हैं।

कंद (Tuber) : जब पौधे का भूमिगत तना मोटा होकर फूल जाता है और उसमें छोटी – छोटी कलिकाएं (Buds) एवं आंखे (eyes) होती हैं, कंद कहलाते हैं।

जड़ / मूल (Root) : एक पुष्पीय पौधे का वह भाग जो जमीन के नीचे होता है, वह जड़ कहलाता है लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि पौधे कोई भी भाग जो जमीन के नीचे है जड़ ही होगा, यह तना भी हो सकता है।

प्ररोह (shoot) : पुष्पीय पौधे का वह भाग जो जमीन के उपर होता है, प्ररोह कहलाता है।

शीर्षस्थ (Apical) : तने या पुष्पवृंत के ऊपरी सिरे / अग्रभाग को शीर्षस्थ कहते हैं।

षटकोणीय (Hexagonal)	:	पौधे के तने को यदि समतल क्षैतिज के समांतर कांटा जाए तो तने के किनारे 6 कोणयुक्त होते हैं, ऐसे तने को हेक्जागोनल या षटकोणीय कहते हैं।
पर्वसंधियों (Nodes)	:	पौधों का तना पर्व एवं पर्वसंधियों में विभक्त रहता है, पर्वसंधियां फूली होती हैं इस भाग को पर्वसंधि कहते हैं। पर्वसंधियों से नई कलिकाएं, पत्तियां एवं शाखाएं निकलती हैं।
कलिकाएं (Buds)	:	मुख्य तना एवं शाखा के मध्य या शाखा एवं पर्णवृंत के मध्य छोटी संरचना होती है उसे कलिका कहते हैं। यह कलिका या तो नयी शाखा या पुष्पवृंत में परिवर्तित होती है
एकांतर (alternate)	:	तने पर जब पत्तियां अलग–अलग स्तर पर व्यवस्थित होती है। एवं कोई दो पत्तियां आपस में एक दूसरे के सम्मुख नहीं होती है।
डण्ठल / पर्णवृंत (Petiole)	:	पत्ती का वह भाग जिसके साथ पत्ती तने पर जुड़ी रहती है, डण्ठल कहलाता है। सामान्य भाषा मे फूल एवं फल जिसपर लगते है, उस संरचना को भी डण्ठल कहते है।
सहपत्र / हरित दल (Bract)	:	एक छोटी परिवर्तित पत्ती के आकार की संरचना जो कि फूल या फूलों के गुच्छे के निचले भाग पर होती है। यह हरी एवं लाल रंग की होती है।
जालिकावत् शिरा विन्यास (Reticulate venation)	:	जब पत्ती में शिराएं अनियमित रूप से फैलकर एक जाल का निर्माण करती हैं उसे जालिकावत् विन्यास कहते हैं।
समान्तर शिरा विन्यास (Parallel venation)	:	जब पत्ती / फलक की शिराएं एक दूसरे की समान्तर क्रम में लगी रहती हैं, तो इसे समान्तर शिरा विन्यास कहते हैं।
अवृत्तीय (sessile)	:	जब पत्ती पर्णवृंत रहित होती है एवं वह तने पर सीधे पर्णवृंत / डण्ठल के बिना ही लगी रहती है।
पर्णवृन्तयुक्त (Petiolated)	:	जब पत्ति में पर्णवृंत / डण्ठल होता है। एवं वह तने पर पर्णवृंत / डण्ठल के साथ लगी रहती है, उसे पर्णवृंतयुक्त कहते हैं।

सर्पिलाकार (spirally)	:	जब तने पर पत्तियां घुमावदार क्रम में व्यवस्थित होती हैं जिस प्रकार घड़ी की सुई गोल–गोल घूमती है, उसे सर्पिलाकार क्रम कहते हैं।
पर्णाधार (Leaf base)	:	पत्ती का वह भाग जो तने के पास होता है, उसे पर्णाधार कहते हैं। अर्थात जिस जगह से पत्ती पर्णवृंत या तने से जुड़ी रहती है।
पत्रक (Leaflets)	:	जब पत्ती का फलक एक सरल पत्ती के समान न होकर कई भागों में विभक्त होता है किन्तु वे सभी एक ही मध्य सिरा पर व्यवस्थित रहती हैं संयुक्त पत्ती के एक छोटे भाग को पत्रक कहते है। जैसे – आंवला, नीम एवं बबूल आदि।
स्तरिका (Lamina)	:	स्तरिका पत्ती का हरा तथा फैला हुआ भाग है जिसमें शिराएं तथा शिरिकाएं होते हैं। इसके बीच में एक सुस्पष्ट शिरा होती है।
भालाकार (Lanceolate)	:	पत्तियाँ भाले के आकार की जिसकी लंबाई, चौड़ाई से 2–4 गुना लंबी होती है। इसके दोनों सिरे पतले होते हैं, एवं मध्य से नीचे का भाग चौड़ा होता है।
हस्ताकार (Palmate)	:	जब पत्ती का फलक पर्णवृंत के उपर चार या उससे अधिक भागों में बंटा रहता है, एवं पर्णवृंत के एक बिन्दु से निकलकर सभी पत्रक की मध्य शिराएं अलग–अलग फैलती हैं तो उसे हस्ताकार कहते हैं जो हमारे हाथ के हथेली के समान होती हैं।
त्रिपालित (Trifoliate)	:	जब एक पर्णवृंत पर तीन पत्तियां लगी होती हैं उसे त्रिपालित कहते हैं जैसा कि पलाश की पत्तियाँ होती हैं।
बेलनाकार (oblong)	:	जब पत्ती की लंबाई चौड़ाई की अपेक्षा ज्यादा हो और दोनों किनारे सामान्तर हो तो उसे बेलनाकार कहते है।
सम्मुख / अभिमुख (opposite)	:	तने पर जब पत्तियां एक ही स्तर पर आमने–सामने व्यवस्थित होती है, तो उसे सम्मुख कहते हैं।
पुष्पक्रम (Inflorescence)	:	तने पर फूलों के व्यवस्थित होने के क्रम को पुष्पक्रम कहते है।

असीमाक्षी पुष्पक्रम (racemose)	:	जब पुष्पवृंत शाखित नहीं होता है और उस पर वृंतीय पुष्प लगते हैं, तो उसे असीमाक्षी पुष्पक्रम कहते हैं।
ससीमाक्षी प्रकार (cymose)	:	जब पुष्पवृंत शाखित नहीं होता ओर उस पर वृंतीय पुष्प लगते है एवं एवं पुष्पक्रम की उपरी सतह समतल होती है और पुष्पक्रम के बीच के पुष्प पहले खिलते है, तो उसे ससीमाक्षी पुष्पक्रम कहते है।
छत्रक पुष्पक्रम (Corymbose Inflorescence)	:	जब पुष्पवृंत शाखित नहीं होता है और उस पर वृंतीय पुष्प लगते है वृंतीय पुष्प अलग–अलग ऊंचाई से लगने के बावजूद ऊपर से पुष्पक्रम की सतह समतल होती है अर्थात एक छत्रक के आकार के दिखते हैं, उन्हें छत्रक पुष्पक्रम कहते हैं।
स्पैडिक्स (Spadix)	:	जब अशाखित पुष्पववृंत का ऊपरी भाग फूला हुआ गूदेदार हो और उस पर अवृंतीय एकलिंगी पुष्प लगे हों उसे स्पैडिक्स कहते हैं।
दल (Patels)	:	फूल का वह भाग जो रंगीन होने के साथ–साथ कीट पतंगों एवं मनुष्यों को आकर्षित करता है एवं फूल का सबसे अंदर का भाग होता है।
दलपुंज (Corolla)	:	पुष्प दल के समूह को दलपुंज कहते हैं।
अतिव्यापित (Overlapping)	:	जब दलपुंज में प्रत्येक दल का दांहिना या बांया भाग एक–दूसरे के उपर चढ़े हुए (दलों का आंशिक भाग एक–दूसरे से ढँकना), होते हैं, ऐसे दलों को अतिव्यापित कहते हैं।
परिदलपुंज (perianth)	:	फूल का वह भाग जो पुकेंसर एवं स्त्रीकेसर को चारों तरफ से घेरे रखता है। उसे परिदलपुंज कहते हैं। परिदलपुंज में बाह्यदल पुंज एवं दलपुंज होते हैं।
वर्तिकाग्र (Stigma)	:	स्त्रीकेसर का वह भाग जहां परागकण, बीजांड से निषेचन होता है।
वर्तिका (Style)	:	अंडाशय के ऊपर नलिका के समान निकला हुआ भाग जिस पर वर्तिकाग्र स्थित रहता है, उसे वर्तिका कहते हैं।
पुकेंसरयुक्त (Stamens)	:	वे पुष्प जिनमें नरजननांग होते हैं, उन्हें पुकेंसरयुक्त कहते हैं।

उभयलिंगी (hermaphrodite)	:	वे पुष्प जिनमें पुकेंसर एवं स्त्रीकेसर दोनों पाये जाते हैं, उन्हें उभयलिंगी कहते हैं।
एकलिंगी (Unisexual)	:	वे पुष्प जिनमें कोई एक पुकेंसर या स्त्रीकेसर पाया जाता हैं, उन्हें एकलिंगी कहते हैं।
कैप्सूल / सम्पुट (Capsule)	:	वे फल जिसमें या दो या अधिक खंड होते हैं और परिपक्व होकर सूख जाते हैं और तब दो भाग में फूटकर बीज निकलते हैं।
सुसुप्तावास्था (Dormancy)	:	जब कंद या प्रकंद का जमीन से उपर का भाग फूलने फलने के बाद सूख जाता है किन्तु उसका कंद जमीन के अंदर निष्क्रिय अवस्था में पड़ा रहता है। मौसम आने पर या वारिश होने पर यह पुनः अंकुरित होता है उसे सुसुप्तावास्था कहते हैं।

नोट

नोट

STATE FOREST RESEARCH INSTITUTE
POLIPATHER, JABALPUR (M.P.)

(An Autonomous Institute of Department of Forest, Govt. of M.P.)
Phone : 0761-2661938, 2665540, Fax : 0761-2661304
E-mail : sdfri@rediffmail.com, mpsfri@gmail.com
Website : http//www.mpsfri.org

QCI

CERTIFIED ISO INSTITUTE

Godfather Print Systems # 9425863853, 9425863848